श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०
श्री विश्वप्रकाश, बी० ए०, एल-एल० बी०

विषय-सूची

सूचना

निम्न ग्राहकों का चन्दा सितम्बर मास में समाप्त हो जाता है। प्रार्थना है कि वे मनियार्डर से २) भेज दें। यदि १५ सितम्बर तक मनियार्डर न आया तो अक्टूबर का अंक वी० पी० से भेजा जायगा। २१६, २७२, २८३, २८४, २९०, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३,

वेदोदय
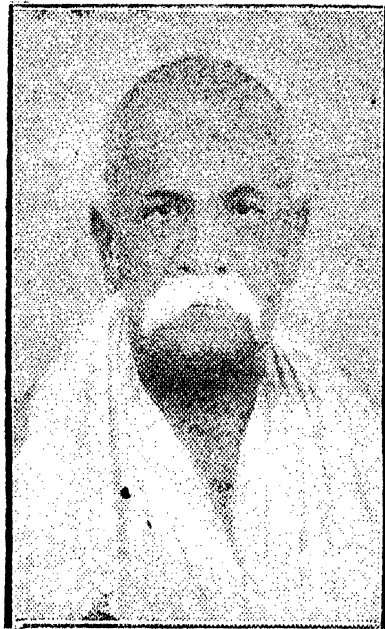
कविता कामिनि कान्त
श्री पं० नाथूराम जी शंकर शर्मा "शंकर"

जन्म संवत् १९१६ मृत्यु संवत् १९८७

ओ३म्
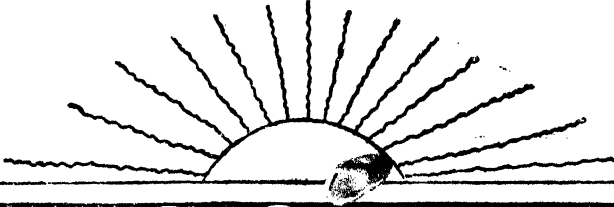
पश्चात् प्राञ्च आ तन्वन्ति यदुदेति विभासति

[अथर्ववेद १३ । ४ । १ । १]

जब वह उदय होता है तो पश्चिम से पूर्व तक सब चीज़ें प्रकाशित हो जाती हैं।

From west to east are lit up all, when he rises & shines.

भाग ५ भाद्रपद संवत् १९८९, दयानन्दाब्द १०८, संख्या ६
सितम्बर १९३२, आर्यसंवत्सर १९७२९४९०३३ पू. सं. ३०

प्रभु की व्यापकता

[श्री शान्ति स्वरूप जी वर्म्मा, मेरठ]

ऊख में मिठास जैसे,
नीबू में खटास जैसे,
पुष्प में सुवास जैसे
वीणा में झंकार है।

फण में है विष जैसे
दुग्ध में है घृत जैसे,
बीज में है वृक्ष जैसे
पाथर में भार है।

❀ ❀ ❀ ❀

चन्द्रमा में शीत जैसे,
सूरज में ताप जैसे,
नीरद में नीर जैसे
पात में बयार है।

तैसे ही छिपे हैं प्रभु
नर तन माँहि देखो,
जिनका स्वरूप सत्य
शुद्ध ओम्कार है॥

———

वैदिक सप्ताह और अवैदिक मास

अभी वैदिक सप्ताह समाप्त हुआ है। इसमें आर्य भाइयों ने अपनी अपनी रुचि, स्थानिक आवश्यकताओं और शक्ति के अनुसार वैदिक धर्म का प्रचार किया है। हवन यज्ञ किये गये, आर्ष ग्रन्थों की कथायें हुई। आर्य सिद्धांतों पर भजन तथा व्याख्यान हुये। यह सब किस लिये? इसलिये कि वैदिक संस्कृति की टिम-टिमाती हुई ज्योति को अधिक प्रकाश मिल सके और लोगों में वैदिक धर्म के लिये अधिक से अधिक प्रेम उत्पन्न किया जा सके।

कोई नहीं कह सकता कि इसका कुछ न कुछ प्रभाव नहीं हुआ। मैं तो समझता हूं कि थोड़ा प्रचार भी कुछ न कुछ श्रद्धा उत्पन्न कर ही देता है। लेकिन जो बीज बोया जाता है उसको सींचने और अन्यान्य खाद्य-पदार्थों को पहुंचाने की भी तो आवश्यकता होती हैं। यद्यपि कृषि का पहला अंग बीज बोना है, परन्तु जो किसान बीज बोकर ही लंबी तान कर सो रहता है वह कभी उसको फलीभूत होने की आशा नहीं रख सकता। यदि आपने खेत में बीज बोया है तो आपका कर्त्तव्य यह भी है कि उसका प्रति-दिन निरीक्षण करते और देखते रहे कि अंकुर कितनी उन्नति कर रहा है। उसको समय पर पानी पहुंचाते रहें, जो घास या अनिष्ट पौधे उठ खड़े होते हैं उनको निकालने का यत्न करें जिससे खेत की मिट्टी की संपूर्ण शक्ति केवल उस पौधे की वृद्धि में ही लग जावे।

परन्तु यदि कोई किसान बीज बो कर ही खेत में चूहे छोड़ दे जिससे वे उन सब बीजों को उगने से पहले ही खा जाये तो ऐसे किसान को आप क्या कहेंगे?

आप पूछेंगे कि इस लम्बे चौड़े दृष्टान्त का दार्ष्टान्त क्या है? मैं मोटे

शब्दों में उत्तर दूंगा कि आर्य्यसमाज और उसके सभासद तथा अधिकारी गण ! मैंने आर्य्य समाज की प्रगति का ३४ वर्ष से निकटस्थ अवलोकन किया है और मुझे इस विषय में किसी प्रकार का भी अन्तर प्रतीत नहीं हुआ। जो दशा पहले थी वह अब भी है। हाँ, किसी किसी अंश में अवनति अवश्य हुई है। हम वह किसान हैं जो सेर भर बीज खेत में डालकर सौ दो सौ चूहे छोड़ देते हैं। और यह चूहे सारा खेत खा जाते हैं। कहीं इक्का दुक्का बेशर्म बीज पड़ा रह गया तो वह उग आता है। इस प्रकार आर्य्य सामाजिकों की संख्या बढ़ जाती है। जो सभासद बढ़ते हैं उनका श्रेय हमारे ऊपर नहीं है। हमने तो इतने चूहे छोड़े कि वे अवश्य समस्त खेत को निर्बीज करने के लिये पर्य्याप्त थे। परन्तु यदि कोई बीज उन चूहों से बच रहा तो या तो उन चूहों का दोष है जिन्होंने उस बीज को ढूढ़ नहीं पाया या उस बीज का जो इस प्रकार मुंह छिपाकर भाग गया।

मेरा तात्पर्य क्या है ? जब मैं वार्षिक उत्सवों या वैदिक-सप्ताह आदि अवसरों पर आर्य्य समाज के अधिकारियों को बड़े जोश के साथ कार्य्य करते देखता हूं तो मेरे आनन्द की सीमा नहीं रहती। मैं उनके हृदयों में वैदिक धर्म प्रचार के लिये श्रद्धा और प्रेम दोनों पाता हूं। यदि ऐसा न होता तो वह रात दिन इस प्रकार परिश्रम कभी न करते। परन्तु वार्षिक-उत्सव [illegible] होते ही क्या होता है ? उसके अगले सप्ताह में ही समाज में जाइये, शून्य ! निराकार ! जिन मन्त्री, प्रधान ने गला फाड़फाड़कर समाज की सभासदी के लिये लोगों से अपील की और दौड़ दौड़ कर फार्म बांटे वह ही नदारद। बीज बो दिया और कर्त्तव्य समाप्त ! मानों वह फार्म देने के साथ साथ यह कह रहे हैं कि "भाइयो, आर्य्य समाज के सभासद हो जाओ क्योंकि हम अब आर्य्य समाज के सभासद रहते रहते थक गये हैं। हम तो आयेंगे नहीं। यदि आप भी सभासद न बने तो आर्य्य समाज टूट जाएगा। हम आर्य्य समाज के प्रेमी हैं इसलिये चाहते हैं कि आप आ जायं।" मैं चौक समाज प्रयाग को देखता हूं। यहाँ सवा सौ से अधिक सभासद हैं और २१ अंतरग सभासद ! साप्ताहिक अधिवेशन नियमानुसार होते हैं और पचास के लगभग स्त्री पुरुष आ जाते हैं। परन्तु आर्य्य समाज के सभासदों की संख्या बहुत कम होती है। और अन्तरङ्ग तो आठ दस शायद ही आते हों। इसका फल जो कुछ है वह सभी जानते हैं। ख़ुदरा फज़ीहत, दीगरां रानसीहत।

परन्तु मैं इस लेख में एक और भयंकर बातकी ओर संकेत करना चाहता

हूँ। वह है अवैदिक मास ! अभी वैदिक सप्ताह समाप्त हुआ और अभी अवैदिक मास का आरम्भ भी हो गया ! मेरा तात्पर्य है कि सितम्बर में आर्य्य समाज का साल समाप्त होता है। अक्टूबर में नया निर्वाचन होगा ! मानो हम उस समय सम्वत्सरेष्टि यज्ञ करेंगे। इसके लिये अधिकारियों की ओर से अभी से कोशिशें होने लगी होंगी। लोगों ने देखना आरम्भ कर दिया होगा कि कहाँ कहाँ के कौन कौन सभासद हैं उन्होंने चन्दा दिया या नहीं। न देनेवालों में यदि मित्र हैं तो ~) मासिक के हिसाब से ।।।) हमीं क्यों न जमा कर दें। यदि शत्रु हैं तो अच्छा है चन्दा बाक़ी रहे। कूड़ा जितना कम हो उतना ही अच्छा। उनको सम्मति देने का अधिकार ही न रहेगा। यदि उदासीन हैं तो यत्न किया जाय कि हमारे पक्ष में बोलें। इस प्रकार समस्त मास।

"ओ३म् निर्वाचनाय स्वाहा, इदं निर्वाचनाय, इदन्नमम" की आहुतियों की धूम रहेगी। यही हमारी श्रुति और यही हमारी स्मृति! यही हमारा शास्त्र और यही हमारा वेद, यही हमारी स्तुति और यही प्रार्थना उपासना! आहा! कितनी मनोरंजक (या हृदय-विदारक) बात है! जो मज़ा ओ३म् के जाप में नहीं आता, जो मज़ा वेद मंत्रों के सुनने में नहीं आता वह मज़ा सभासदों को अपने पक्ष में करने में आता है। जिन सभासदों के दुख पर हमने कभी दो आँसू नहीं बहाये, जिन सभासदों के सुख की वार्ता सुनकर शायद हम दान लेने के नियत से ही कभी कभी चले गये हों, जिनके लिये हमने कभी यह परवाह नहीं की कि इनको संध्या गायत्री आती है या नहीं, जिनके लिये हमने कभी यह जानने का यत्न नहीं किया कि इनको क़ुरान से प्रेम है या वेदों से, उनके घर हम इस मास में आवश्य जायंगे और अपना दुखड़ा रोवेंगे। वह दुखड़ा क्या होगा! यह नहीं कि वैदिक प्रचार कैसे हो! किन्तु इसलिये कि अमुक पुरुष बड़ा ख़राब है। या तो वह मन्त्री पद के लिये बैठा है और अत्याचार कर रहा है या बड़ा दुष्ट और अयोग्य है और मन्त्री पद को चाहता है। आप चलिये और अमुक के पक्ष में वोट देकर आर्य्य समाज की डूबती हुई किश्ती को पार लगाइये। जब यह आर्य्य समाज के परम हितैषी जी किसी नवीन सभासद के घर पहुंचते हैं तो वह अचंभे से इनके मुंह की ओर ताकने लगता है। वह अभी नया अंकुर है। उसमें वायु के झोंकों को सहन करने की शक्ति नहीं आई। उसने तो पिछले वैदिक सप्ताह में ही मान लिखाया है और वह भी आर्य्य सयाज के कार्य्यों तथा

सभासदों के उत्साह और कुर्बानियों की चित्ताकर्षक कथायें सुन कर। उसको तो स्वप्न में आशा न थी कि ज़मीन को स्वर्ग बनाने की चेष्टा करने वाले समाज के भीतर भी नरक की आग धधक रही है। वह तो यह समझता था कि आर्य्य समाज एक श्रेष्ठ पुरुषों का समाज है। मैं इनमें जाकर कुछ न कुछ श्रेष्ठ अवश्य बन जाऊंगा। आज जब यज्ञदत्त को देवदत्त की और देवदत्त को यज्ञदत्त की बुराई करते सुनता है तो उसके कोमल हृदय को कितना आघात पहुंचता है। वह कह उठता है :—

"सर्वे चौरा यूयम् ?"

"अरे क्या आप सब चोर ही हैं ?" उसकी समझ में नहीं आता कि किसका विश्वास करूं और किसका विश्वास न करूं। वह यज्ञदत्त दोनों का ही विश्वास कर लेता है और कहता है मैं देवदत्त की बात मानता हूं कि यज्ञदत्त ख़राब है और यज्ञदत्त की बात भी मानता हूं कि देवदत्त ख़राब है इसलिये आज से समाज में पैर नहीं रखने का।

ऊपर मैंने जो दृश्य खींचा है वह काल्पनिक नहीं है। इस प्रकार के सैकड़ों मनुष्य हर जगह मिलेंगे जो इसी कारण समाज को छोड़ बैठे। वह समाज के सिद्धान्तों पर विश्वास रखते हैं परन्तु सामाजिकों के झगड़ों पर नहीं। वह कान पर हाथ रखकर चुप बैठ रहते हैं और जो मनचले कुछ तमाशा भी देखना चाहते हैं केवल वही कुछ दिनों लकीर पीटते हैं। परन्तु स्थायी मेम्बर वह भी नहीं बनते। और आर्य्यत्व उनमें भी नहीं आता ऐसे सैकड़ों सभासद मिलेंगे जिनके मन, वचन या कर्म से आर्य्य समाज के प्रेम की गंध तक नहीं आती परन्तु वह बारह आने साल देकर तमाशा देखने में अपनी कोई क्षति नहीं समझते। इनको साहस दिलाने वाले वही मंत्री प्रधान होते हैं जिनकी उंगली पर वह नाचते हैं या जो इनकी उंगली पर नाचते हैं। वोट देनेवाले तो संकोच ही क्यों करें। उनको तो आर्य्य समाज से प्रेम ही नहीं। उनकी बला से आर्य्य समाज का भला हो या बुरा। उनको गुत्थम गुत्था देखने से गरज़। परन्तु उन आर्य्य समाज के प्रेमियों से क्या कहा जाय जो अपने थोड़े से क्षणिक लाभ के लिये इन लोगों का सहारा ढूँढ़ते हैं और इनके द्वारा आर्य समाज की जड़ में कुल्हाड़ा मार देते हैं। यदि यह तनिक भी अपने मनमें विचार करें और बुद्धि से काम लें तो इनको चाहिये कि उनके विपक्षी के मन्त्री या प्रधान हो जाने से समाज को इतनी हानि नहीं पहुंचती जितनी ऐसे तमाशाइयों की सहायता से विजय प्राप्त

करने से पहुंचती है। याद रखिये कि कभी कभी विजय पराजय, की अपेक्षा कहीं अधिक हानिकारक हो जाती है। मैं व्यक्ति-गत रूप से तो यह पसन्द करूँगा कि निर्वाचन में मेरी हार हो जाय और मेरे विपक्षी की जीत। लेकिन मैं ऐसे लोगों के पास वोट लेने के लिये कभी न जाऊँगा कि जिनके हृदय में आर्य्य-समाज के लिये कुछ भी प्रेम नहीं और जो केवल तमाशा देखने के लिये ही बारह आने पैसे दे बैठते हैं। या जिनके बारह आने वही लोग अपनी जेब से देते हैं जिनको उनके वोट की जरूरत होती है। हमारी इन करतूतों ने आर्य समाज को वैदिक प्रेमियों से रिक्त कर रक्खा है। मेरा अपना विचार तो यह है कि यदि आर्य्य समाज में केवल वही लोग हों जो अपने जीवन में और दूसरों के जीवन में आर्य्य-समाज के सिद्धान्तों का संचार करना चाहते हैं तो फिर चाहे कोई प्रधान या मंत्री क्यों न हो आर्य्य समाज का अहित नहीं होने का।

मुझे एक आश्चर्य है। आज कल आर्य्य समाज की प्रायः सभी संस्थायें निर्धन हैं। रोज कमाना और रोज खाना, न कोई सम्पत्ति है और न जायदाद। जब आर्य समाज का विस्तार बढ़ेगा तो इसकी सम्पत्ति भी स्वभावतः बढ़ेगी। यदि शून्य कोष पर निर्वाचन में इतने झगड़े पड़ते हैं तो सम्पत्ति-शाली होने पर तो निर्वाचन के दिन मिलेटिरी सेना बुलाने की जरूरत पड़ा करेगी। कहीं २ पुलीस की शरण तो अब भी ली जाती है।

आप शायद पूछने लगें कि क्या निर्वाचन के लिये झगड़ने वाले यह सब लोग आर्य्य समाज के प्रेमी नहीं? मैं स्पष्ट कहता हूं और बिना संकोच के कहता हूँ कि इनमें ९० प्रतिशतक वास्तविक प्रेम रखते हैं और १० प्रतिशतक ऐसे भी हैं जिनके उद्देश्य आर्य्य समाज की उन्नति नहीं किन्तु अवनति है। वे आर्य्य समाज की सार्वजनिकता (Democratic nature) से लाभ उठाने के लिये उसमें आ मिले हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो आर्य्य समाज पर प्रभुत्व प्राप्त (Capture) करने के लिये अन्य संस्थाओं से आ गये हैं और जिस प्रकार से जासूस ज्वा-रियों के साथ जुआ खेल करके उन्हीं को पकड़वा देता है इसी प्रकार आर्य्य समाज के कामों में जोश दिखलाकर वह सीधे साधे आर्य्यों से अपनी संस्थाओं का काम लेना चाहते हैं। परन्तु जो ९० प्रति-शतक रह गये वह दोस्त तो हैं परन्तु 'नादान दोस्त' हैं। कहावत है कि नादान दोस्त से दाना दुश्मन बहुत कम हानिप्रद होता है। यही हाल इन आर्य्य समाज के प्रेमियों का है। जो

कभी अनेकों विधर्मियों का आन्दोलन नहीं करता वह इनका प्रेम कर गुजरता है। यह अपनी छोटी छोटी बातों के इतने पक्के होते हैं और उन पर इतना हठ करते हैं कि सर्वस्व स्वाहा करने के लिये तैयार हो जाते हैं।

हमने प्रायः लोगों को कहते सुना है कि आर्य्य-समाज सार्व-जनिक संस्था (democratic body) है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को बराबर का अधिकार है। यह बात मुझे भी स्वीकार है। परन्तु याद रखिये कि जितना बराबर का अधिकार है उतना बराबर का उत्तरदायित्व भी तो है। आप उत्तरदायित्व के समय तो बगलें झांके और अधिकार के समय आ कूदें। यह कैसी डिमाकरैसी। डिमाकरैसी का अर्थ तो यह है कि समाज की रक्षा का कर्तव्य सभी के ऊपर है। यदि केवल अधिकारों का नाम ही डिमाकरैसी है तो ऐसी डिमाकरैसी संसार में बहुत दिन नहीं चल सकती। डिमाकरैसी साध्य है, साधन नहीं। रोम में पहले ऐकाधिपत्य था। लोग उससे तंग आगये। तब सार्वजनिक राज्य स्थापित हुआ। कुछ दिनों तो यह राज्य अच्छा चलता परन्तु इसकी दुर्गति हो गई। जो विचारे रोमन साम्राज्य के लिये हथेली पर जान रखकर चेष्टा करते थे उन्हीं को डिमाकरैसी के मूर्ख प्रेमी बहुमत से तलवार के धार उतरवा दिया करते थे। नतीजा यह हुआ कि यदि ऐकाधिपत्य में लोग एक मनुष्य के अत्याचारों से तंग थे तो इस सार्वजनिक शासन में हजारों के अत्याचार से तंग आगये और जूलियस सीजर के आते आते फिर ऐकाधिपत्य स्थापित हो गया। मैं समझता हूं कि यही हाल यहां होने वाला है। आर्य्य समाज गुरुडम को नष्ट करने और वैयक्तिक स्वातंत्र्य को स्थापित करने के लिये बनाया गया है जिससे वैदिक धर्म के असली स्वरूप से सभी को लाभ पहुँच सके। परन्तु निर्वाचनों के झगड़ों से तंग आकर बहुत से लोग किसी एक गुरु के आश्रित उसके बताये हुये मंत्र जाप को कहीं अच्छा समझने लगे हैं। यह बुरी बात हो या भली। यह और बात है। परन्तु ऐसा होता अवश्य है। बहुत से धर्म के प्यासे लोग आपके निर्वाचनों की तू तू मैं मैं में पड़ना नहीं चाहते। बहुत सों को तो इससे घृणा है।

मैं एक हाल का उदाहरण दूं। अबकी साल एक भाई जो डाक्टर आफ लिट्रेचर की डिग्री प्राप्त हैं और जो बहुत ही सरल-हृदय और बचपन से आर्य्य समाज के श्रद्धालु रहे हैं वृन्दावन गुरुकुल पर गये और प्रतिनिधि भी बने। उन्होंने कई दिन रह कर क्या देखा? दिन में तो "धर्म" पर व्याख्यान होते थे और रात में उन्हीं धर्म के व्याख्याताओं

के "अधर्म युक्त" जीवन की अधर्म युक्त घटनाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन किया जाता था। मुझसे कहा गया कि बहुत से लोग न रात को सोये, न उन्होंने विचारे यात्रियों को सोने दिया। होता क्या था? जिधर देखो उधर निर्वाचनों के लिये कनवैसिंग (Convassing). आप जानते हैं कि कनवैसिंग कितना बुरा काम है। इसमें शुद्ध से शुद्ध मनुष्य पर धूल फेंकने का यत्न किया जाता है। जिसमें कोई भी दोष न हो उसको घृणित से घृणित अपराध का दोषी बना देना इन वोट प्राप्त करने वालों के बायें हाथ का कर्त्तव्य है, अमुक प्रधान रुपया खा गया, अमुक मन्त्री बड़ा दुष्ट है, अमुक तो गुरु बनना चाहता है, अमुक ने इतने चेले बना रक्खे हैं, रातों यही तमाशा हुआ। मेरे पास प्रायः कनवैसर लोग नहीं आया करते और मैं रात को मज़े की नींद सोया करता हूं। परन्तु एक सज्जन अबकी साल प्रातः काल पांच बजे पहुँच ही गये और कहने लगे। "अमुक के मंत्री होने के लिये प्रस्ताव है, आपकी क्या राय है?" मैंने उनसे कहा, "शायद वह तैयार न हों?"। कहने लगे, "मैंने तैय्यार कर लिया है।" मैं चुप होगया और वह न जाने क्या सोचकर चले गये। जब हम सब लाग चल दिये तो मथुरा स्टेशन पर डाक्टर साहब से बातचीत हुई। मैंने कहा "कहिये जलसा कैसा रहा?"। कहने लगे, "मैं पहली बार ही आया हूं और यही मेरी अन्तिम बार है।" आप बस, इसी से समझ सकते हैं कि आप जलसों पर कितना धर्म का प्रचार करते हैं और कितना अधर्म का। यदि "नहि सत्यात् परोधर्मः" का शास्त्र-वाक्य ठीक है और अर्थापत्ति से "नहि असत्यात् परो अधर्मः" भी ठीक है तो हमारा अधिक समय मिथ्याचार में ही व्यतीत होता है। बहुत से शुद्ध हृदय, निर्दोष नये सभासद जिनको आपके प्रधानों, मंत्रियों, उपदेशकों और पंडितों पर अगाध श्रद्धा है इन निर्वाचन के एजेण्टों की करतूतों द्वारा आर्य्य समाज के लिये बड़े बुरे विचार ले जाते हैं। मैं जब त्रिवेणी के स्नान को जाता हूं तो गंगाजल की शीतलता तो मिनट भर में ही समाप्त हो जाती है परन्तु रेत और धूल ही घर तक आती है। हमारे उत्सवों में जाने वालों का भी यही हाल होता है। धर्म उपदेश तो पिंडाल के फ़र्श पर ही रह जाते हैं लेकिन इधर उधर की बुराइयां अवश्य मन पर अंकित हो जाती हैं।

अब से लेकर और निर्वाचन की तिथि तक कितना मिथ्याचार धर्म और आर्य्य समाज के नाम पर होगा इसको देखकर हृदय कांपता है। कई आर्य्य भाई रातों चिन्ता में मग्न रहेंगे। एक

दूसरे की त्रुटियों को खोजने के लिये क्या क्या षड्यंत्र न रचे जायंगे, कितनी गुप्त सभायें न होगीं और कितनी बार रजिष्ट्रों के पत्रे लौटपौट न किये जायंगे? यदि कहीं एक पाई का भी अन्तर पड़ गया या जोड़ने या लिखने में भूल होगई तो न जाने क्या क्या कथायें न गढ़ी जायंगी। वैदिक सप्ताह में प्रत्येक समाज में थोड़ा बहुत हवन हुआ होगा। उसकी सामग्री से जो सुगन्धि उड़ी होगी उसकी मात्रा अवश्यमेव वायुमंडल को शुद्ध करने में सफल हुई होगी। परन्तु आर्य्य समाज सम्बन्धी इस अवैदिक मास या मल-मास में जो दुर्गन्ध उड़ेगी वह यज्ञ की सुगन्धि को सर्वथा ही तिरोभूत कर देगी, ऐसी मेरी धारणा है।

इस दुर्गन्धि से बचने का केवल एक ही उपाय है। यदि आर्य्य भाई आर्य्य समाज का हित चाहते हैं तो किसी वोट मांगने वाले को अपने पास फटकने न दें और सभा में बैठकर जिसके लिये उनकी स्वतंत्र सम्मति हो उसके लिये वोट देवें। इससे यदि कभी कोई निर्वाचन अनुचित भी हो जायगा तो उससे किसी प्रकार की हानि नहीं होने की। आर्य्य समाज के संगठन की मेशीन ऐसी होनी चाहिये कि कोई प्रधान या मंत्री हो जाय परन्तु काम ठीक चलता रहे और किसी प्रकार का द्वेष न हो।

बहुत से लोग यह शिकायत किया करते हैं कि पुराने लोग नये आदमियों को नहीं आने देते। इस प्रकार पुरानों और नयों में युद्ध हुआ करता है। परन्तु इसमें न तो पुराने ही सर्वथा अपराधी हैं न नये ही निरपराधी। यह तो स्पष्ट ही है कि पुराने सदा न रहेंगे। उनको तो स्थान रिक्त करना ही है। बुढ़ापा न सही तो मृत्यु ही सही। परन्तु उनको यह विश्वास होना चाहिये कि नये लोग जो पद लेना चाहते हैं वह बनी बनाई संस्थाओं को बिगाड़ तो नहीं देंगे। बहुत से नवयुवक औरंगजेब के समान अपने अग्रजों के दीर्घ-जीवन से थक जाते हैं। यदि वह कुछ दिनों अप्रेंटिस रहकर उनके आधीन काम करना सीखें तो शीघ्र ही उनको सब अधिकार प्राप्त हो जांय और बुड्ढे लोग अपने युवकों के हाथ में संस्थाओं की बाग देकर अपने को भाग्यवान समझें। परन्तु हमारे युवक जितनी योग्यता नहीं होती उससे अधिक काम करना चाहते हैं और समझते हैं कि जो कुछ त्रुटियां दिखाई देती हैं वह सब बुड्ढों के ही कारण हैं। संभव है यह बात किसी अंश में ठीक भी हो। परन्तु कोई नहीं कह सकता कि दूसरों के हाथ में जादू की लकड़ी है जिसके एक दो तीन करते ही समस्त दोष दूर हो जायंगे।

प्रत्येक अच्छा संगठन या निर्वाचन वह है जिसमें एक चौथाई परिवर्त्तन हर साल होता रहे। इससे जहाँ पुराने लो... के अनुभव से समाज वंचित न रहे, वहां नये लोग भी कुछ न कुछ अवश्य आते जांय। इन नये लोगों का काम यह नहीं होना चाहिये कि वह पुरानों को लान तान करें किन्तु यही कि वह कुछ दिनों चुपचाप देखें कि काम की क्या प्रथा है उसमें कितने गुण हैं कितने अवगुण ! पुरानों को चाहिये कि नयों पर विश्वास करें और उन्हें काम करने के लिये उत्साह दिलावें। नयों को चाहिये कि वह आते ही पुरानों पर लांछन न करने लगें। किन्तु भली भाँति परिस्थिति का अवलोकन करें जिससे जब उनकी बारी आवे तो वह सहज ही में अपने कार्य्य में सफलीभूत हो सकें।

यदि ईश्वर पर विश्वास और धर्म पर श्रद्धा रखकर कार्य्य किया जायगा तो अवश्य ही कल्याण होगा। इसके विपरीत यदि अपनी चालाकियों पर विश्वास और मिथ्याचार पर श्रद्धा की गई तो अच्छे परिणाम की आशा व्यर्थ ही है।

महाकवि शंकर

अगस्त के वेदोदय का अन्तिम पृष्ठ मशीन पर था जब हमें सूचना मिली कि महाकवि शङ्कर विदा हो गये।

शंकर आर्य्यसमाज के प्राण थे उन्होंने अपनी सारी कवित्व शक्ति आर्यसमाज के लिये सुन्दर कविता बनाने में लगा दी। शङ्कर ने उत्तम भजनों का आदर्श आर्य समाज के सम्मुख रक्खा। उनके "अनुराग रत्न" नामक संग्रह में अनेकों भजन मिलते हैं।

शंकर के जीवन में एक बड़ी विशेषता हमें यह मिलती है कि वे ऋषि दयानन्द के परम भक्त तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों के परम पोषक थे। यही कारण है कि उनकी कविता का क्षेत्र संकुचित रहा। और कुछ तो आर्य कवि कह कर उनकी खिल्ली उड़ाया करते थे। परन्तु हिन्दी भाषा के आचार्य श्री पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी शङ्कर की कविताओं का बड़ा सम्मान करते हैं। इन्होंने "कविता कलाप" नामक ग्रन्थ में शंकर की कुछ उत्कृष्ट कवितायें दी हैं।

शंकर की महत्ता में एक बात ने और रुकावट डाली है। उनकी कवितायें बड़े भद्दे ढंग से रद्दी कागज़ पर छपी हैं। यदि उनका एक सुन्दर संग्रह प्रकाशित किया जाय तो बहुत उत्तम हो।

---

(३०)

यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहँ मनुष्याश्चरामसि ।
अचित्ती यत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥

(ऋ० ७।८९।५)

(वरुण) हे परमात्मन (यत् किं च) जो कुछ (इदं) यह (अभिद्रोहं) बुराई। (मनुष्याः) हम लोग (दैव्येजने) विद्वान आप्त पुरुषों के प्रति (चरामसि) करते हैं। (यत्) और जो (अचित्ति) असावधानी के कारण बूझे (तव धर्म) आप के नियम को (आ युयोपिम) उल्लंघन करते हैं। (देव) हे प्रभो (तस्माद् एनसः) उस पाप से (नः) हमको (मा रीरिषः) नष्ट न हो जाने दीजिये।

इस वेद मंत्र में बताया गया है कि मनुष्य परमात्मा के नियमों का उल्लंघन और ऋषि महर्षियों का विरोध इसलिये करते हैं कि वह 'अचित्ती' हैं अर्थात् समझते नहीं। बिना विचारे ही काम को कर डालते हैं। अगर मनुष्य सदा यह सोचता रहे कि मेरा कर्तव्य क्या है और अकर्तव्य क्या है तो अवश्य वह पाप कर्म से बच सकेगा। अज्ञान ही सब पापों का मूल है और ज्ञान या विवेक से ही हमको छुटकारा मिल सकता है। हमको यदि भली भाँति विश्वास हो जाय कि जो काम हम कर रहे हैं उससे हमको हानि होगी तो वस्तुतः हमारे मन में उस कर्म के अनुसार ग्लानि होगी और हम शनैः २ उसको त्याग देंगे।

इस मन्त्र में ईश्वर से यही प्रार्थना की गई है कि हे ईश्वर! हम नादान हैं, अल्प हैं, विवेक शून्य हैं इसीलिये हमसे पाप हो जाते हैं, प्रभो, ऐसी कृपा कीजिये कि यह पाप हमको सर्वथा नष्ट न कर सकें।

जो पाप हम करते हैं, वह अवश्य ही हमारे नाश का कारण होते हैं। लेकिन अगर पापी आदमी ईश्वर का सहाय मांगता है तो उन पापों में कमी हो जाती है। क्योंकि प्रार्थना से उसका आत्मा पापों के दुखों को सहन करने और भविष्य में पापों का मुकाबिला करने के लिये बलवान हो जाता है। और वह सर्वथा नाश होने से बच जाता है।

यहां यह तात्पर्य नहीं है कि प्रार्थना करने से पापों का फल न मिलेगा। प्रार्थना का तात्पर्य इतना है कि प्रबल आत्मा दुख भोग कर भी नष्ट न होगा। जैसे एक ऋणी आदमी यदि परिश्रम करके धन कमाने लगे तो ऋण उसकी मृत्यु का कारण न हो सकेगा और उसमें उस कारण को चुकाने की शक्ति आ जायगी और यदि ऋणी पुरुष रंज करने में ही अपना समय व्यतीत करदे तो वह अवश्य नष्ट हो जायगा। इसी प्रकार प्रार्थना का हाल है। ज्यों ज्यों मनुष्य ईश्वर की प्रार्थना करेगा उसमें पापों के फलों को भोगने और भविष्य में पाप न करने की योग्यता आती जायगी और वह शनैः शनैः शुद्ध हो जायगा।

यह और जो इसी सूक्त के चार पहले मन्त्र जो पिछले अंकों में दिये जा चुके हैं नित्य प्रति प्रार्थना करने के लिये बड़े उत्कृष्ट और लाभ-दायक हैं। यदि श्रद्धा के साथ अपने को कमज़ोर मानकर इसका पाठ किया जाय तो हृदय द्रवीभूत हो जाता है।

पत्र व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखिये।

माला

श्री सत्यप्रकाश जी एम० एस० सी०

कभी लेखनी कर में लेकर
कविता लिखने मैं जाता
और हृदय यह मेरा पीछे
रह जाता मैं पछताता
पुनः भाग मैं पीछे आता
पर न वहां उसको पाता
परवस यह मेरा मन प्यारा
मुझे नचाता, भरमाता
तू कहता है,—हे कवि! मुझको
कविता करना सिखला दे
और नहीं तो अपने दो पद
याद करा दे समझा दे

पर न दिवस वे हैं प्यारे! जब
कविता सीखी जाती थी
सजधज कर यह बनी अप्सरा
अपना नाच दिखाती थी
पर-रुचि की कठपुतली होकर
गली गली घुमा करती

और रंगीले दरबारों में
जाकर अपना मन भरती
होते बिम्बित भाव हृदय में
पा देवी का आश्वासन
प्रेम साधना मन में होती
दर्पण होता यह जीवन
उसका मैं उसको अर्पित कर
करता स्नेही हो चिन्तन
तब मेरी वह कविता जननी
देती कुछ प्रिय मधुर सुमन
उनकी ही मैं माला रचकर
उसके चरणों में धरता
यही काम मेरा है प्यारे !
तू भी क्यों न यही करता
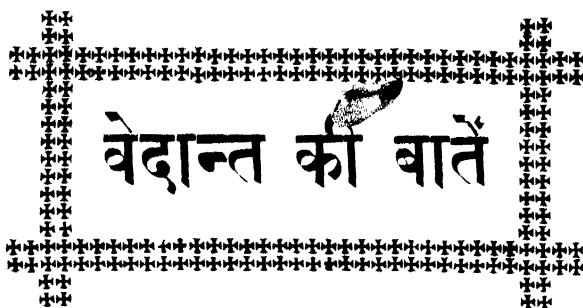
(३)

ईश्वर ज्ञान वाला है ।

संसार की उत्पत्ति, स्थिति और लय के सिवाय ईश्वर एक काम करता है, वह है "ज्ञान का दान" । न केवल उसने संसार की चीजें बनाई । न केवल वह इनको जीवित ही रखता है । न केवल वह इनको नष्ट ही करता है । इन तीन कामों के अतिरिक्त उसका चौथा काम यह भी है कि मनुष्य को इन चीजों का ज्ञान भी दे । इसकी बाबत व्यास मुनि ने यह सूत्र दिया है :—

शास्त्र योनित्वात्

(वेदान्त १। १। ३)

शास्त्र की योनि होने से ।

योनि का अर्थ है कारण । शास्त्र का अर्थ है ज्ञान । ईश्वर हमारे ज्ञान का भी कारण है ।

ज्ञान में तीन बातें शामिल हैं शब्द, अर्थ, और उनका सम्बन्ध । हमको जो कुछ ज्ञान है उसके आधार के लिये कोई शब्द चाहिये । हम जब किसी चीज की बाबत सोचते हैं तो हमारे मन में एक शब्द आ जाता है । जब कुछ भाव उठता है तो उसके लिये भी कोई न कोई शब्द होता है । यह शब्द निरर्थक नहीं हो तो इनका कुछ न कुछ अर्थ होता है । शब्दों का कोई न कोई अर्थ होना ही ज्ञान है, ज्ञान को ही शास्त्र कहते हैं । शास्त्र का दूसरा नाम वेद है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर हमको इस सृष्टि के जन्म, स्थिति तथा नाश के विषय में वेद द्वारा ज्ञान देता है। ईश्वर वेद की योनि है । जैसे वह संसार की योनि है उसी प्रकार वह वेद की भी योनि है, जैसे उसने संसार रचा उसी

प्रकार उसने हमको यह ज्ञान भी दिया कि संसार किस प्रकार रचा गया, किस प्रकार स्थित रहता है और किस प्रकार नाश हो जाता है।

जैसे ईश्वर की विचित्र सृष्टि को देख कर हम अनुमान करते हैं कि इसका बनाने वाला कोई है उसी प्रकार मनुष्य के ज्ञान को देखकर भी हमको यही अनुमान होता है कि इस ज्ञान का देने वाला कोई अवश्य है।

मनुष्य को ज्ञान कैसे हो जाता है? यह बड़ी जटिल समस्या है जो आज तक सुलझ नहीं सकी। आप किसी बच्चे की ओर देखिये। कुछ दिनों में वह आपकी बातें समझने लगता है, यह सब कैसे संभव हो गया? साधारण लोग कहेंगे कि उसने हमारी बातें सुनी और सुनते सुनते समझने लगा। लेकिन प्रश्न यह है कि वह समझने ही क्यों लगा? आपने उसके दिमाग में क्या कर दिया? अगर आप बच्चे की ज्ञान प्राप्त करने के प्रवृत्ति को धीरे धीरे निरन्तर देखते जायं तो आपको बड़ा आश्चर्य होगा! पानी से भाप बनना या भाप से बादल बनकर पानी बरस जाना इतनी अद्भुत बात नहीं है जितनी मनुष्य की ज्ञान प्राप्ति की बात। ज्ञान में बोली और उसका अर्थ दोनों ही आ जाते हैं।

आप कहेंगे कि हम एक दूसरे की बात सुनकर बोली सीख जाते हैं। यह ठीक है। परन्तु सबसे पहले बोली कैसे सीखी गई। और सबसे पहले आदमी को किसने सुझाया कि एक दूसरे पर भाव प्रकट करने के लिये बोली की जरूरत है। मनुष्य ने बोली बनाई नहीं। जैसे उसको देखने के लिये आंखें जन्म से ही मिली थीं उसी प्रकार बोलने के लिये जिह्वा भी जन्म से ही मिली थी। जिस प्रकार आंख सूर्य्य की रोशनी से देख सकती थी। इसी प्रकार जिह्वा को काम में लाने के लिये भी शब्द चाहिये थे। और यही शब्द वेद हैं। वेद के द्वारा हम जान सकते हैं कि ईश्वर चीजों को बनाता, क़ायम रखता और बिगाड़ता है। अर्थात् वह शास्त्र की योनि है।

उर्दू लिपि पर विचार

[श्री महेशप्रसाद जी, मौलवी आलिम फ़ाज़िल, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी]

निस्सन्देह यह मेरा साहित्यक तथा विद्याविषयक उत्साह था जो मुझे ईरान ले गया। मैंने वहाँ बहुत सी उत्तम व लाभदायक पुस्तकें देखीं जिनमें से एक 'कुल्लियात मलकम' भाग प्रथम (کلیات ملکم جلد اول) भी है। यह तिहरान (ईरान की राजधानी) में सन् १३२५ हिजरी अर्थात् १९०७ ई० में छपी है।

उक्त पुस्तक के पृष्ठ ८७ से लेकर पृष्ठ १२४ तक में फ़ारसी लिपि के सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक चर्चा है। लेखक महोदय ने फ़ारसी लिपि में २४ दोष बतलाये हैं। उनमें से बहुत से दोषों को गिनाया है और कुछ अर्थात् तीन या चार की बाबत कहा है कि यदि मैं इनको प्रगट करूंगा तो काफ़िर (अधर्मी) कहलाऊंगा। इसी कारण लेखक ने उनकी चर्चा नहीं की।

उर्दू शब्द तुर्की भाषा का है। इसका अर्थ है—शाही लश्कर (राजसेना), लश्करगाह (छावनी), किन्तु अब भारत की एक भाषा का नाम है। मुसलमान हिन्दू सभी प्रायः मानते हैं कि यह ब्रज भाषा से निकली है! इसमें क्रिया व सर्वनाम आदि हिन्दी के ही हैं। परन्तु बहुत से शब्द व विचार आदि अरबी, फ़ारसी व तुर्की के हैं और इसकी लिपि व अक्षर आदि अरबी फ़ारसी के हैं। अस्तु फ़ारसी लिपि के सम्बन्ध में जो दोष 'कुल्लियात मलकम' में हैं उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो उर्दू लिपि पर भी लागू होते हैं।

निदान मैंने सोचा कि उक्त ईरानी ग्रन्थ में जो दोष लिखे गये हैं उनको तथा अन्य सारे दोषों को एकत्र कर दूं ताकि लोगों को अधिक लाभ हो सके, इसी का फल है कि यह हिन्दी प्रेमियों की सेवा में भेंट किया जा रहा है और इसमें जो कुछ मैंने लिखा है विस्तार पूर्वक लिखा है ताकि समझने-समझाने में सुगमता हो।

आवश्यकता तो यह थी कि कुल्लियात मलकम के लेखक का मैं थोड़ा सा परिचय देता किन्तु शोक का विषय है कि मुझे इस विषय में केवल इतना ही अभी तक मालूम हुआ है कि लेखक महोदय का नाम प्रिन्स मीरज़ा मलकम खां नाज़िमउद्-दौलः (پرنس میرزا ملکم خاں ناظم الدولہ) है। वह लण्डन में ईरान राज्य की ओर से प्रधान प्रतिनिधि थे। परन्तु लेखक की पुस्तक के देखने से मैं इस परिणाम पर अवश्य पहुँचा हूं कि प्रिन्स

महोदय एक बड़े चतुर व दूरदर्शी व्यक्ति थे। और उनको ईरान के अभ्युदय का भारी ख़्याल था।

तुर्कों पर हमारे बहुतेरे मुसल्मान भाइयों को बहुत नाज़ है। उनमें अरबी लिपि का चलन था जो अर्वाचीन फ़ारसी लिपि की माता है। उन लोगों ने उस लिपि को कठिन तथा दोष-पूर्ण समझा, इस कारण बदल दिया। संभव है कि इसमें 'कुल्लियात मलकम' के लेख का कुछ प्रभाव हो। ईरान में अभी तक फ़ारसी लिपि है किन्तु जागृति की जो लहर ईरान में है उसके प्रभाव की संभावना लिपि पर भी हो सकती है। अब देखना यह है कि भारत में क्या होता है।

औरङ्गाबाद (हैदराबाद दक्षिण) में 'अंजमुन तरक्की उर्दू' नामक एक संस्था है। उसकी ओर से 'उर्दू' नामी उच्च-कोटि की एक त्रैमासिक पत्रिका उर्दू भाषा में निकलती है। सन् १९२१ ई० व १९२२ ई० में उस पत्रिका में उर्दू लिपि के विषय में कई लेख निकल चुके हैं। उनमें लिपि-सम्बन्धी दोषों को दूर करने तथा सुधारने की चर्चा थी। पर अभी तक कोई उचित परिणाम नहीं निकला।

उर्दू-वर्ण-माला

[१]

उर्दू-वर्ण-माला के अक्षरों के संबन्ध में थोड़ा बहुत जान लेने से उन कठिनाइयों तथा दोषों के समझने में सुगमता होगी जो उर्दू लिपि में हैं अतः उनकी चर्चा पहले की जा रही है :—

	उर्दू अक्षर	उच्चारण	हिन्दी
१	ا	अलिफ़	अ
२	ب	बे	ब
३	پ	पे	प
४	ت	ते	त
५	ٹ	टे	ट
६	ث	से	स
७	ج	जीम	ज
८	چ	चे	च
९	ح	हे	ह
१०	خ	ख़े	ख़
११	د	दाल	द
१२	ڈ	डाल	ड
१३	ذ	ज़ाल	ज़
१४	ر	रे	र
१५	ڑ	ड़े	ड़
१६	ز	ज़े	ज़
१७	ژ	झे	ज़
१८	ـسـ س	सीन	स
१९	ـشـ ش	शीन	श
२०	ص	साद	स
२१	ض	ज़ाद	ज़
२२	ط	तो	त
२३	ظ	ज़ो	ज़
२४	ع	ऐन	अ
२५	غ	ग़ैन	ग़

२६	ف	फ़े	फ़
२७	ق	क़ाफ़	क
२८	ک	काफ़	क
२९	گ گ	गाफ़	ग
३०	ل	लाम	ल
३१	م	मीम	म
३२	ن	नू	न
३३	و	वाव	व
३४	ہ / ھ	हे / दो चश्मी हे	ह / ह
३५	لا	लाम अलिफ	ला
३६	ء - ء	हमज़ा	अ
३७	ي	छोटी इये	य
३८	ے	बड़ी इये	य

नोट—उक्त अक्षरों में से २, ३, ४, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, २२, २३, २६, ३४, ३५, व ३६ संख्या वाले अक्षर स्त्रीलिङ्ग और बाक़ी पुलिङ्ग माने जाते हैं पर ३१ के विषय में मत-भेद है।

उर्दू-वर्ण-माला के ٹ ڈ व ڑ अक्षर हिन्दी से लिये गये हैं। अरबी में कुल २८ और फारसी में कुल ३२ अक्षर होते हैं।

(२)

अक्षरों के उच्चारण का स्थान

(१) कण्ठ—ا ح خ ع غ ق ک گ ہ ء

(२) तालू—ج چ ذ ز ژ ش ض ي ظ

(३) होंठ—ب پ ف م و

(४) दान्त की जड़—ت ث د ن ل ط ص س ذ

(५) जिह्वा की जड़—ٹ ڈ ڑ

(३)

उर्दू-वर्ण-माला में से जिन अक्षरों का स्वरूप बहुधा एक ही प्रकार का है और जिनमें बिन्दी या अन्य चिह्न ही से भेद है उनका विवरण इस प्रकार है —

(१) ب پ ت ٹ ث

(२) ج چ ح خ

(३) د ڈ ذ

(४) ر ڑ ز ژ

(५) س ش अथवा س ش

(६) ص ض

(७) ط ظ

(८) ع غ

(९) ک گ या گ

अक्षरों के भिन्न भिन्न रूप

(१)

अब यह जानना चाहिये कि वर्ण-माला के ا د ڈ ذ ر ڑ ز ژ व و अक्षर ऐसे हैं जो शब्द में अपने आगे आने वाले अक्षर से किसी दशा में भी नहीं मिला करते। अतः ये अक्षर और ط व ظ अक्षर जब किसी शब्द में मिले हुये होते हैं तो उनके स्वरूप में बहुत कम

परिवर्तन होता है। परन्तु इनके सिवा अन्य अक्षरों की सूरत किसी शब्द के आरम्भ, मध्य अथवा अन्त में मिले हुये होने की दशा में निस्सन्देह बहुत बदल जाया करती है। जैसा कि नीचे दिखाया जा रहा है। पर यह ज्ञात रहे कि जो अक्षर बहुधा एक ही रङ्ग के हैं उनमें से केवल एक ही की बाबत लिखना परियाप्त है उसी में अन्य की बाबत अनुमान कर लेना चाहिये।

ب (बे-ब)

आरंभ में
- بـ- بسکٹ (बिस्कुट- بولا (बोला)
- بـ- بکری (बकरी) بالو (बालू)
- /. – بخت (बख़्त) بچہ बच्चा)

मध्य में- ـبـ صبر सबर محبت (मुहब्बत)

अन्त में-ب شب ب- (शब) کرتب (करतब)

ج (जीम-ज)

आदि में- جـ جب (जब) جناب (जनाब)

मध्य में-ـجـ (हजाब) حجاب شجر (शजर)

अन्त में-ج ـج - کج (कज) سج (सज)

ع (ऐन-आ)

आदि में- عـ عار (आर) عرب (अरब)

मध्य में-ـعـ بعد (बाद) استعفا (स्तीफा)

अन्त में-ع تابع (ताबे) وسیع (वसीअ

ف (फे-फ)

आदि में - فـ فرش (फ़र्श) فساد (फ़साद)

मध्य में-ـفـ - سفر (सफ़र) صفائی (सफ़ाई)

अन्त में-ـف - کف (कफ़) نصف (निसफ़)

ک (काफ़ क)

आदि में
- کـ-کرتب (करतब) کوڑا (कूड़ा)
- کا- کاہ - (काह) کل (कल)

मध्य में
- ـکـ-شکر (शकर) مکتب (मकतब)
- ـکا شکار (शिकार) نکلنا (निकलना)

अंत में-ـک -ک ایک (एक) چابک (चाबुक)

ل (लाम-ल)

आदि में - لـ لوٹا (लोटा) لب (लब)

मध्य में - ـلا گلاب (गुलाब) علم (इल्म)

अन्त में -ل ـل گل (गुल) بابل (बाबुल)

م (मीम-म)

आदि में
- مـ مارنا मारना مدرسہ मदरसा
- مـ مرغ (मुर्ग़) مفت (मुफ़्त)

मध्य में - ـمـ ثمر (समर) کمر (कमर)

अन्त में ـم - قلم (क़लम) قاسم (क़ासिम)

ن नून-न

आदिमें نـ- نقل (नक़ल) نصیحت (नसीहत)

ن - نانا (नाना) نئی (नई)

/ - نمکین (नमकीन) نماز (नमाज़)

मध्य में ـنـ قند (क़न्द) سرکنا (सरकना)

अन्त में ن - ـن تن (तन) چمن (चमन)

ی (इये-या)

आदि में - یـ یعقوب याकूब یونان यूनान

یـ - ید (यद) یار (यार)

یـ - یہودی (यहूदी) یمن (यमन)

मध्य में ـیـ - نیم (नीम) فقیر (फ़क़ीर)

अन्त में ی-ـی بی بی (बीबी) دستی (दस्ती)

(२)

यह बात स्पष्ट है कि ऊपर जो शब्द उदाहरण रूप में दिये गये हैं उनमें केवल उन्हीं अक्षरों का वर्णन नहीं जिनके

आदि, मध्य या अन्त के स्वरूपों की चर्चा की गई है बल्कि उनमें ही अनेक ऐसे अक्षरों के परिवर्तित स्वरूपों का भी पता संक्षेप में लग जाता है जिनकी परिवर्तित दशाओं का वर्णन विस्तार पूर्वक नहीं किया है। जैसे —

بسکٹ शब्द में ٹ (टे-ट) देखो ب में
بکری „ „ ر (रे-र)
بخت „ „ خ (खे-ख़)
حجاب शब्द में ح (हे-ह) देखो ح में
سچ „ „ س (सीन-स)
देखो फ में
صفائي „ „ ص व ء (साद व हमज़ा)
فقیر „ „ ق (क़ाफ़)
نصف „ „ ص (साद)

निदान उक्त प्रवाह की बातें ऊपर के उदाहरणों में पाई जाती हैं जिनको तनिक विचार करने पर जान सकते हैं।

[३]

उर्दू वर्णमाला के जिन अक्षरों का स्वरूप बहुधा एक प्रवाह का होता है उनका परिचय पहले दिया जा चुका है। वे जब कि किसी शब्द के आरम्भ, मध्य या अन्त में होते हैं तो उनकी दशा प्रत्येक अवस्था में प्रायः एक ही रहती है किन्तु कई अक्षर ऐसे भी हैं जो कि उस अवस्था में तो किसी अक्षर के समान हो जाते हैं जब कि अपने छोटे रूप में किसी शब्द के आरम्भ या अन्त के पहले होते हैं। पर जब कि वे अकेले होते हैं अथवा किसी शब्द के अन्त में होते हैं तो समानता नहीं हुआ करती जैसे ف व ق का अन्तर स्पष्ट ही है परन्तु نقل (नक़ल) قند (क़न्द) فقیر (फकीर) یعقوب (याक़ूब) سفر (सफ़र) فرش (फ़र्श) व صفائي (सफ़ाई) ऐसे शब्दों से स्पष्ट है कि उक्त दोनों (ف व ق) अक्षर जब कि किसी शब्द के आरम्भ या मध्य में मिले हुये होते हैं तो इनमें केवल एकही बिन्दी का भेद होता है।

ب ل ن ي (बे, लाम, नून व इये) अक्षर एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं परन्तु بسکٹ (बिस्कुट), بولا (बोला) لب (लब) لوٹا (लौटा), نقل (नक़ल) نصیحت (नसीहत) یعقوب (याकूब) व یونان (यूनान) ऐसे शब्दों में चारों अक्षरों में केवल बिन्दी से भेद है। उक्त चारों अक्षरों में से ل (लाम) छोड़कर बाक़ी तीनों अक्षरों में केवल बिन्दी से भेद माना जाता है। अन्यथा यह तीनों अक्षर तो किसी शब्द के आरम्भ तथा मध्य में एक समान ही होते हैं। अस्तु इन शब्दों में अक्षरों को ध्यान पूर्वक देखना चाहिये—

بد (बद) ند (नद) ید (यद) جناب (जनाब) حباب (हुबाब) حیات (हयात) خبر (खबर) خیر (ख़ैर) ناپ (नाप) باپ (बाप) نات (नात) بات (बात)।

ज्ञात हो कि उर्दू-वर्ण-माला के अक्षर जिस रूप में दिये गये हैं वह उनका वह स्वरूप है जो टाइप में है। यह स्वरूप बहुत कुछ उर्दू सुलिपि से मिलता जुलता है किन्तु उर्दू की लिपि जो शिकस्ता बोली जाती है उसके अक्षर टाइप व सुलिपि दोनों से बहुत भिन्न होते हैं।

अक्षरों में गोल माल

(१)

कभी कभी ऐसा होता है कि ی या ے (ईये) लिखी हुई होती है किन्तु अलिफ़ पढ़ा जाता है—

ادنیٰ या حتےٰ (हत्ता) حتیٰ या ادنےٰ (अदना) عیسیٰ या عیسےٰ (ईसा)।

इसमाईल या रहमान ऐसे शब्द अब इस रूप में اسمعیل رحمان भी लिखे जाते हैं किन्तु जब कि اسمٰعیل رحمٰن इस सूरत में हों तो इनमें चाहे अलिफ़ लिखा हुआ हो या न हो किन्तु अलिफ़ अक्षर का उच्चारण (दोनों शब्दों के मध्य में) अवश्य होता है।

ا (अलिफ़) व ع (ऐन) दोनों अक्षर कण्ठ ही से बोले जाते हैं और इनमें धोका हो जाता है ऐसी अवस्था में (मालूम) معلوم शब्द इस सूरत مالوم में भी हो सकता है क्योंकि सारे मनुष्य ع (ऐन) को तो मरोड़ कर नहीं बोला करते।

अलिफ़ तथा ع (ऐन) वाले कुछ शब्दः—

ا (अलिफ़) से—اذان (अज़ान); الم (अलम), مامور (मामूर), ارز (अर्ज़) व ارض (अर्ज़)।

ع (ऐन) से—عذاب (अज़ाब), علم (अलम) معمور (मामूर) व عرض (अर्ज़)।

अब कुछ शब्द ऐसे दिये जाते हैं जिनमें ا व ہ का उच्चारण एक सा ही है:—

ا (अलिफ़) से—جھگڑا (झगड़ा) بجانا (बजाना) سجانا (सजना)।

ہ (हे) से—کلیجہ (कलेजा), صرفہ (सरफ़ा) جلسہ (जलसा)।

अरबी वर्णमाला के २८ अक्षरों में से ظ ط ض ص ش س ز ر ذ د ث ت व ن हरूफ़ शमसी (حروف شمشی) अर्थात् शमसी अक्षर बोले जाते हैं और ا ب ج ح خ ع غ ف ق ک ل م و ہ व ی हरूफ़ कमरी (حروف قمری) अर्थात् कमरी अक्षर कहे जाते हैं। निदान जिस अरबी शब्द का ال (अलिफ़, लाम) आता है तो अलिफ़ का उच्चारण होगा पर लाम का नहीं होता बल्कि शमसी अक्षर दोबारा पढ़ने में आता है जैसे الدین (अद्दीन) और जब कि अलिफ़ लाम से पहले अक्षर भी अन्य शब्द रहता है तो अलिफ लाम का उच्चारण बिल्कुल ही नहीं हुआ करता। जैसे

امام‌الدین (इमामउद्दीन) या (इमामुद्दीन) जिस अरबी शब्द का आदि अक्षर कोई कमरी होता है और उसके पहले ال (अलिफ लाम) आता है अलिफ लाम पढ़ा जाता है और कमरी अक्षर दोबारा पढ़ने में नहीं आता है जैसे القمر (अल-कमर) परन्तु ऐसी दशा में यदि ال (अलिफ लाम) से पहले भी कोई शब्द होता है तो केवल ل (लाम) का उच्चारण होगा। जैसे عبدالغفور (अब्दुलगफ़ूर) بالکل (बिल्कुल), بالفعل (बिलफेल)।

अब यह जतलाने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती कि अरबी की ऐसी बातों से (जो उर्दू में जड़ पकड़ गई हैं) उर्दू लिपि की समस्या कैसी जटिल हो गई है। निदान इसी का फल है कि عیدالاضحی (ईदुल अज़हा) शब्द बिगड़ कर अशुद्ध रूप में عیدالاضحیٰ (ईदुज़्ज़ुहा) बन गया है।

[२]

ऊपर बतलाया जा चुका है कि ا (अलिफ) व ع (ऐन) में धोखा हो जाता है। इसी प्रकार कई अक्षर और भी हैं जिनमें गड़बड़ी होती है क्योंकि उन अक्षरों की ध्वनि में समानता है।

(१) ت (ते) व ط (तो) में जैसे:—
ت से—تیر (तीर) تولنا (तौलना), تاک (ताक) تازہ (ताज़ा) تاریخ (तारीख़) व تبع (तबा) आदि ط से—مضبوط (मज़बूत) طول (तूल) طرف (तरफ) طبع (तबा) आदि। किन्तु कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनको ت या ط किसी एक से लिखना अशुद्ध नहीं माना जाता जैसे:—طہران या تہران (तिहरान) और طیار या تیار (तैयार)।

(२) ث (से) س (सीन) व (साद) ص में। जैसे—ث से ثابت (साबित) व ثانی (सानी) आदि س से—سوار (सवार) سم (सुम) سو (सौ) व سلاح (सलाह) आदि ص*से—صابن (साबुन) صاف (साफ) صندوق (सन्दूक) صد (सद) व صلاح (सलाह) आदि।

(३) ح (हे) व ہ (हे) में। जैसे—
ح से—حاجی (हाजी) व حرام (हराम) आदि—
ہ से—ہاتھی (हाथी) व ہوا (हवा) आदि—

---

* कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका उच्चारण एक सा है किन्तु अक्षरों की भिन्नता से ही अर्थों में भी भिन्नता है। सवाब व मामूर दो ढङ्गों से लिखे जाते हैं। जैसे—

ث (से) मे ثواب (सवाब) अर्थ बदला, मज़ा।

ص (साद) से صواب (सवाब) अर्थ ठीक, दुरुस्त।

ا (अलिफ) से مامور (मामूर) अर्थ हुक्म दिया गया।

ع (ऐन) से معمور (मामूर) अर्थ बस्ती, शहर, आबाद।

ذ (जाल) से نذیر (नज़ीर) [illegible] वाला।

ظ (ज़ो) से نظیر (नज़ीर) समान, तुल्य।

(४) ذ (ज़ाल) ز (ज़े) ض (ज़ाद) व ظ (ज़ो) में। जैसे—

ذ से رذیل (रज़ील) व ذهین (ज़हीन) आदि।

ز से وزیر (वज़ीर) راز (राज़) व زراعت (ज़राअत) आदि।

ض से مضمون (मज़ामून) व قرضه (क़रज़ा) आदि।

ظ से ظالم (ज़ालिम) व ظریف (ज़रीफ) आदि।

परन्तु कुछ शब्द ऐसे हैं जिनको ذ व ز में से किसी एक से लिखना ठीक है। जैसे—गुज़र گذر - گزر और गुज़ारिश گذارش - گزارش.

(५) ع (ऐन) व ء (हमज़ा) में। जैसे—

ع (ऐन) से—مفعول (मफऊल) व تعریف -तारीफ- आदि।

ء (हमज़ा) से—مسئول (मसऊल) व یاس यास आदि।

(६) ع (ऐन) व ی (ये) में। जैसे :—

ع से—شریعت (शरीअत) व ممانعت (मोमानिअत) आदि।

ی से—اذیت (अज़ीअत) व خیریت (खैरियत) आदि।

ن से (नून) न की कई दशायें हैं एक तो वह जब कि उसका उच्चारण पूर्ण-रूप से होता है। जैसे کمان (कमान) نذیر -नज़ीर- आदि ऐसे शब्दों में।

दूसरा हाल यह है जब कि नून का उच्चारण साफ़ साफ़ नहीं होता-बल्कि नाम से गुंगनी ध्वनि पैदा होती है। इसको नून गुन्नः - نون غنه कहते हैं। जैसे کنواں कुंवा سانپ सांप व اینٹ (ईंट) ऐसे शब्द आदि।

वैदिक धर्म पर एक दृष्टि

(गतांक से आगे)

[श्रीयुत राज्यरत्न मास्टर आत्म[illegible] जी, अमृतसरी, बड़ौदा]

वैदिक धर्म के इसी (अगस्त १९३२) अङ्क में हिंदू वा आर्य्य-मृत-पुरुष के दक्षिण हस्त में सोने की एक अँगूठी की चर्चा संपादक जी ने दृढ़ता-पूर्वक श्री सायण भाष्य के आधार पर की है।

इसी अङ्क के १ पृष्ठ पर संपादक जी के दिन रात के शब्दों की जगह स्वामी श्री हरिप्रसाद जी ने जो 'पुण्य-अपुण्य' सुझाये हैं। हम भी श्री स्वामी जी के उक्त प्रस्तावित शब्दों को अधिक उत्तम समझते तथा सहमत भी हैं। सायण भाष्य वा संपादक वै० धर्म की द० हाथ की हिरण्यमय (सोने की अंगूठी) के स्थान में हम दानरूपी यशस्वी कर्म दक्षिण हाथ की सोने की अंगूठी के करेंगे। इस के लिये हेतु यह है कि

हिरण्य के अर्थ सब प्राचीन कोषों में स्वर्ण तथा यश के भी हैं।

दक्षिण हाथ से दान किया जाता है —यही इस हाथ का यश वा हिरण्य है। मरते समय हिंदू तथा आर्य्य समाजी भी दान कराना उचित समझते हैं। और निर्धन से निर्धन हिंदू भी कुछ दान यथा-शक्ति जरूर करता है। इसलिये मरने के पीछे उसका दानरूपी यश लोक पर-लोक में साथ जाता है। सोने की अंगूठी से शवदहन का कुछ भी कल्याण नहीं हो सकता। जो नित्य दान करते हैं वह यशस्वी हाथ लिये गये।

क्या मांस खाना धर्म है ?

स्वामी श्री हरिप्रसाद जी वैदिक मुनि का एक लेख वैदिक धर्म (बाबत मास अगस्त १९३२) में प्रकाशित हुआ है। इसमें महात्मा स्वामी जी ने वै० धर्म आर्य्य जाति हितैषी मान्यवर विचित्र पंडित श्री संपादक को निम्न शब्दों में जो अनुमति दी है उस पर मुझे कुछ विचार करना है। स्वामी जी के शब्द यह हैं :—

"आपको मंत्रों में आये हुये मांस मेदा शब्दों से उदास न होना चाहिये और यह निश्चय जानना चाहिये कि किसी समिति समाज को इनसे मुक्त किया जा सकता है, जाति भरको नहीं। आपको जाति का ख्याल रख कर काम करना चाहिये।"

डाक्टर राजेन्द्र लाल मित्र एम० ए०, पी० एच० डी० ने जो ग्रन्थ अंगरेजी में लिखे—उनमें से एक का नाम Indo

Aryans है उसमें उक्त लेखक ने दर्शाया है कि हिन्दुओं के पूर्वज गो मांस खाते और यज्ञ में भी गो मांस डालते थे। गो मेध का वर्णन वेदों में भी है"—

स्वा० जी का आशीर्वाद उक्त मासिक में डा० राजेन्द्रलाल मित्र के उक्त तंत्र मत के प्रचार की यदि दृढ़ नींव डाल सके तो हमें आश्चर्य नहीं करना होगा। कारण कि वीर अंगरेज गो मांस तथा सुअर मांस भक्षी होने से ही तो हिन्दू तथा यवनों पर जो यह वीरता-प्रद भोजन नहीं करते राज्य कर रहे हैं। महात्मा गांधी जी तो पागल हैं जो अपने सत्याग्रही सैनिकों को मांस की जगह भुने हुए चने और शराब की जगह देशी गुड़ खाने का उपदेश देते नहीं थकते। पंजाबी नामधारी सिख भी भारी पागल हैं जो दो शताब्दियों से सर्व प्रकार के झटका आदि मांस का खाना महापाप समझ कर इनको छूते तक नहीं और वीरता में झटका खोर बंधु सिखों से भी दुगने महावीर हैं। गुरुकुल कांगड़ी के वे ब्रह्मचारी महा डरपोक थे जो 'आर्य भोजन' दाल, रोटी, फल, छाछ और शाक खाते रहे और जिन्होंने हाकी के डंडों से शेर वा चीता मार डाला। एक और सन्यासी महात्मा इनके दल के ही अनेक लोगों को मांस खाने का भारी उपदेश घरों में दे रहे हैं। वह कहा करते हैं कि "हिन्दू वा आर्य समाजी यदि मांस नहीं खावेंगे तो भविष्य में इनकी स्त्रियां मुसलमानों के पास भग जावेंगी।"

आज कल एक नामी अंगरेज डाक्टर साहब ने एक पुस्तक लिखी है जिसमें वह लिखते हैं—कि मेरे प्रान्त के ग्रामीण वीर लोग वैष्णव मत के होने से मांस शराब नहीं खाते पीते। यह लोग खेती करने के बड़े प्रेमी हैं। धूप, शीत और वर्षा रात दिन 'गिर' में यह सहर्ष सहते हैं। बाल बच्चे भी इनके बहुत होते हैं। बड़े डंडे से यह शेर को भगाते रहते हैं। क्या मांस खाना धर्म है? अब इस प्रश्न का उत्तर कुछ देकर यह लेख समाप्त करता हूं। विदित हो कि मनुष्य झूंठ बोल सकता, और चोरी कर सकता है! महात्मा स्वामी हरिप्रसाद जी चूंकि उनके यजमान वा मित्र अनेक "ठाकुर" वा "रायबहादुर" परंपरा से मांस खाते हैं—इसलिये उनको आर्य जाति के इन 'वीर महा पुरुषों का ख़याल रात दिन रहता है, पर मैं तो यह कहूँगा कि चूँकि मनुष्य मांस खा सकता है इस हेतु पर चोरी करना भी क्या धर्म वा कर्तव्य हो सकेगा—यदि नहीं तो चोरी से बढ़कर पाप हिंसा का जिस मांस की प्राप्ति में है उसका मान्यवर महात्मा हरिप्रसाद क्यों कर धर्म कह सकते हैं? यह बात मेरी तुच्छ मति में तो नहीं आती।

श्री पं० देवीदत्त जी द्विवेदी

[चिन्तामणि "मणि"]

विलायत यात्रा

१९११ ई० के चैत्र मास में आप सी० आडेंसर के साथ कलकत्ते रवाना हुए। कलकत्ते में उसका कार-बार था, साथ ही वह कारोनेशन प्रदर्शिनी का मुख्य एजेन्ट भी था।

उक्त पार्सी ने लण्डन में प्रदर्शन दिखाने के हेतु हिन्दुस्तान से बहुत प्रकार के मनुष्य तथा कारीगर साथ लिये। जैसे—

गोंडा बहरायच के मुसलमान नम्वद साज, प्रयाग और अमृसर के कुछ सोनार और कुछ काठ की चीजें बनाने वाले बढ़ई, सींक और मूंज की टोकरी बुनने वाली, खत्री और ब्राह्मणों की स्त्रियां, लखनऊ की चिकन काढ़ने वाली मुसलमान स्त्री और पुरुष इनमें अधिक संख्या में अफीमची थे। वे दिन रात गर्दन झुकाये बैठे ही रहते। इस प्रकार भोटान के भोटिए जो कम्बल बुनते थे और वर्मा के रेशम बुनने वाले, मालाबार के नाचने गाने वाले ईसाई। मद्रास और गुजरात के खेल तमाशा दिखाने वाले बाजीगर, पंजाब के रोटी बनाने वाले ब्राह्मण और कहार। इन सबों को मिला कर ११० आदमी थे।

उपर्युक्त समुदाय मद्रास होते हुए तूतीकोरिन एक्सप्रेस द्वारा समुद्र तट पर पहुँचा। समुद्र भयानक तरंग ले रहा था। छोटे दिल वाले सहम उठे अफीमची रोने लगे :—

"मेरे अल्ला किस बला में फंसाया" यह दृश्य यहां हो रहा था कि इधर एक पुलीस के साथ डाक्टर आ धमके और सब के कपड़े उतरवा कर मुआयना करने लगे। स्वस्थ्य पुरुषों को आज्ञा मिल गई और अस्वस्थ्य रोक लिये गये।

लंका में

आप तूतीकोरिन से ए० वी० कम्पनी के स्टीमर द्वारा रवाना हुए। स्टीमर सीलोन की ओर चला। मार्ग में आपको जहाज़ी रोग हो गया। किन्तु ज्यों त्यों करके दूसरे दिन प्रातःकाल सीलोन पहुंचे। उस समय तक आप स्वस्थ्य हो गये थे। सीलोन (लंका) तूतीकोरिन से ९० मील है। इलाहाबाद से सीलोन तक का रेल और जहाज का व्यय २२) रुपया है। उस स्टीमर से उतर कर आप फ्रेंच स्टीमर पर सवार हुए। यह हांग कांग से आ रहा था। इस पर फ्रेंच सेना थी। जो फ्रांस जा रही थी।

मुसल्मानों के साथ फ्रेंच सेना का दुर्व्यवहार

आपके साथ फ्रेंच स्टीमर पर कुछ हिन्दुस्तानी मुसल्मान भी सवार हुये थे उन में से दोपहर के बाद एक ने अज़ान देना आरम्भ किया। फ्रेंच सैनिक आवाज़ सुनकर बाहर निकल आये और उसकी नकल कर उसके पीछे खड़े हो चिल्लाने लगे। साथ ही हँसते और मुल्समानों की इस क्रिया को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। उस दिन से मुसल्मानों ने जब तक स्टीमर पर रहे फिर कभी अजान नहीं दी।

अदन की दशा

आप चौथे दिन अदन पहुँचे। यहां की विचित्र अवस्था देखी। यहाँ के पहाड़ जैसे आग से जले हों। मुसल्मान जो अदन निवासी थे बड़े गन्दे वेष में दिखाई पड़े।

पोर्ट सईद (मिश्र) में

अदन से चलकर जहाज़ स्वेज-नहर होता हुआ पोर्ट सईद पहुंचा। पोर्ट सईद में जहाज़ बहुत देर तक रुका। अतः आप बन्दरगाह से बाहर जाकर खूब घूमे। यह मिश्र में है। यहाँ मुसलमान हिन्दुओं को क़ाफ़र कहते हैं और अधिक संख्या में अशिक्षित हैं। पोर्ट सईद घूम कर पुनः समय पर आप बन्दरगाह आये और जहाज़ पर सवार हुये। जहाज़ वहाँ से चलकर इटली, सिसिली, कोर्सिका होता हुआ मार्सेल के बन्दरगाह पर रुका।

मार्सेल में

आप यहां जहाज़ से उतर कर सराय में जाकर ठहरे। क्योंकि यहाँ से आपको दूसरे जहाज़ पर जाना होगा। अतएव आपने मार्सेल बाज़ार भी देखा। यह फ्रांस में है यह बड़ा सुन्दर और रमणीक नगर है। लम्बी चौड़ी सड़कें हैं यहाँ सफ़ाई का अच्छा प्रबन्ध है। पालतू पशु

गाय बैल घोड़े खच्चर और शूकर हृष्ट पुष्ट और सुन्दर दिखलाई देते थे। उनके रहने के स्थान साफ़ और पीने के लिये निर्मल नल का पानी ताजी घास और दाना प्रति-क्षण मौजूद रहता था। यहाँ के निवासी नल की अपेक्षा बोतलों का पानी अधिक पीते थे यहां अविनार्य शिक्षा फैली हुई है। हर घर के बच्चे बच्चियां स्कूलों में पढ़ते दिखाई पड़ते हैं। अध्यापक और अध्यापिकायें अपनी सन्तानों को भांति उनके साथ व्यवहार करते हैं जहाँ इतने सद्गुणों से मार्सल नगर पूर्ण था वहाँ एक अवगुण भी मौजूद था कि यहाँ की स्त्रियां नंगी तस्वीरें बेचती थीं जिनका लेना तो दूर रहा आपने देखना अनुचित समझा।

लण्डन में

चार दिनों के बाद आपको जापानी टीमर मिला। अतः उसमें सवार होकर आप आठवें दिन लण्डन पहुंचे। आपके परिचित अंगरेज जो हिन्दुस्तान में रह चुके हैं आपसे मिले। उसके बाद आप रेलगाड़ी के द्वारा ह्वाइट सिटी पहुंचे।

प्रदर्शिनी का घेरा बहुत बड़ा था। आप लोगों के पहुँचने पर प्रदर्शिनी के अधिकारियों ने भर पेट दूध और चीनी द्वारा सत्कार किया।

इस प्रदर्शिनी में जिन जिन देशों में अंग्रेजों का राज्य है। वहां के मनुष्य उनकी असली पोशाक में बुला कर बैठाए गये और आस्ट्रेलिया के ४० स्त्री पुरुष जिनका रंग बहुत सुर्ख था विशेष रूप से घोड़े की सवारी करते थे। न्यूजीलैण्ड के ४५ स्त्री और पुरुष रेड इण्डियन अमरीका से १८ सूडानी मुसलमान १४ स्त्री पुरुष मिश्री १८ अफरीका से १५ वर्मा के २२ जर्मनी के १३ हिन्दुस्तानी ११० सीलोनो ३५ थे ये सब अपने अपने हुनर दिखलाते थे। सुतराम भारतवासी रेड इण्डियन, न्यूजीलैण्ड और जर्मनी वालों की एक सी शकल सूरत और पहिनावा भी एक सा था। प्रदर्शिनी देखने के लिये तमाम यूरोप के स्त्री और पुरुष एकत्रित होते थे। अर्थात् फ्रांस, जर्मन, पुर्तगाल, अमरीका, स्पेन, जिब्राल्टर, नारवे, स्वीडन, बेलजियम, ग्रीस और इटली, अरब, जापान, चीन, तक के मनुष्यों ने भाग लिया था। प्रत्येक कमरों का भिन्न २ टिकट था। मालवा के लोग सुनारी और कुम्हारों का काम अच्छा करते थे गोरे और कद में बहुत छोटे थे।

जो बाहर से बुलाये गये थे। उनका कुल खर्च इंगलैंड की गवर्नमेंट ने बर्दास्त किया था।

प्रदर्शिनी का कच्चा चिट्ठा

इस प्रदर्शिनी में नोटिस बांटी गई जार्ज पञ्चम और रानी मेरी की मूर्त्तियाँ बनाई गईं और हिंदू स्त्री पुरुषों से कहा गया कि गाते-बजाते हुए चलो और लोटे से जल चढ़ाओ एवं पुष्प अक्षत तथा धूप दीप से आर्ती करके पूजा करो। परन्तु आपने ऐसा नहीं किया बल्कि औरों को मना किया, जिसमें बहुतों ने मान लिया और बहुतों ने नहीं। इस बात की चर्चा एजेन्ट और सेक्रेटरी के पास तक पहुँची कि आपने मना किया है। आपसे सब नाराज़ हो गये अतः पूजा की तारीख विलायती समाचार पत्र में छप गई। दर्शकों की बहुत बड़ी भीड़ हुई। यूरोपियन ख़ूब मज़ाक उड़ाते थे ! एक दिन हिन्दुओं के विवाह और बरात किस भांति निकलती है। इसकी नक़ल की गई। अख़बारों में तारीख छपी, बड़े धूमधाम से बारात निकाली गई। मुसलमानों के हाथों में मशालें दी गईं थीं। कुश्ती का दङ्गल भी हुआ। अंग्रेज़ों की बड़ी भीड़ होती थी। आप आर्य के नाम से मशहूर हो गये थे क्योंकि इन खुराफातों में देश की तौहीनी होती थी। अतएव आप सम्मिलित नहीं होते थे। संक्षिप्त प्रदर्शिनी में हिन्दुओं की बुराई बाइसकोप में दिखलाई जाती थी। हिन्दू अपने पशुओं और स्त्रियों के साथ कितना बुरा व्यवहार करते और मारते हैं। इनके साधु झुंड के झुंड गाँजा, भांग और चर्स पी रहे हैं। औरतें अपने बच्चों को गंगा में फेंक रही हैं। मर्द अपनी स्त्री को गंगा किनारे दान कर रहा है कि वह बैकुण्ठ जायगा।

लण्डन में बिना दस्ताना और मोजा के कोई नहीं चल सकता। ज़ोर से चिल्लाना, पेट खुजलाना, व्यर्थ बकवास करना, सड़क पर थूकना असभ्यता है। किन्तु प्रदर्शिनी में हिन्दुस्तान के ९ प्रान्त बनाए गये थे और यू० पी० प्रान्त की स्त्रियां धान और जुवार खेतों में निराती हुई और घास छीलती कानी बद-सूरत लंहगे और धोती फटी हुई जिससे उनके तन दिखलाई पड़ते हों, दिखलाया गया जिससे भारतवासी अयोग्य और असभ्य सिद्ध हों।

प्रदर्शिनी में पार्सी ने अपनी दुकान खोली। काशी के पीतल के बर्तन, लखनऊ के चिकन, काशमीरी दुशाले, धामपुर का नगीना, काठ की चीज़ें, बहरायच के नम्बे, बुद्ध व कृष्ण की मूर्त्ति आदि। बिक्री धड़ाधड़ होने लगी। छः मास में ३ लाख रुपये की आमदनी हुई। आपने अवसर पाकर आर्य-समाज का सन्देशा टूटी-फूटी अंगरेज़ी में लोगों के कानों में पहुंचाना

आरम्भ कर दिया। आपसे कई पादरियों से बहसें भी हुई। वैदिक धर्म की सत्यता का मंडन तथा ईसाई सिद्धान्तों का खण्डन किया। कितने ही पादरी थे जो कुछ कह कर निरोत्तर हो गये। ऋषि दयानन्द जी महाराज का आगमन और वैदिक धर्म की सचाई और दसों नियम जो अंग्रेजी में छपे हुए थे। जिन्हें आप राधामोहन गोकुल जो कलकत्ता के पास से वितीर्ण करने के अभिप्राय से ले गये थे लोगों में बांटा। उसे पढ़ कर नर नारी प्रसन्न होते थे। अब वैदिक धर्म की चर्चा अंग्रेजों में फैली। एक दिन किसी कालेज के प्रिंसिपल अपनी स्त्री को साथ लेकर आपसे मिलने आए और कहा कि मैं भी आर्य हूं। इस प्रेम से मिलने आया हूं, आध घण्टा बातें की और बोला, Your English is very poor. Kindly if you shall come in my college, than I shall help you. परन्तु अभाग्यवश आप उसके कालेज में न जा सके क्योंकि दूकान के काम में अधिक फंसे हुये थे। केवल १॥ दिन की छुट्टी सप्ताह में मिलती थी।

विचित्र साहस

पादरियों पर विजय प्राप्त कर आप फूले न समाये। उसी हर्ष में आपने विपिन चन्द्रपाल के साथ पोलिटिकल कार्य भी छेड़ दिया। पार्सी ने आपको रोका, किन्तु आप न माने। पुलीस ने आपकी रिपोर्ट की। वहां की सरकार ने आपको १२ बजे रात को लण्डन से बाहर निकाल दिया और खर्च देकर हिन्दुस्तान रवाना किया।

हिन्दुस्तान में टेम्प्रेन्स और समाज का कार्य

आपने हिन्दुस्तान में आकर पुनः टेम्प्रेन्स का कार्य अपने हाथ में लिया और भारतवर्ष के कोने कोने अर्थात् मद्रास, बम्बई, सिन्ध, बिलोचिस्तान, बङ्गाल, पञ्जाब, सीमा प्रान्त (पेशावर) जमेरात, खैबरदर्रा, अलीमसजिद, लंडीकोतल, कोहाट, रंगूटल, पाड़ाचुनार, (काबुल के समीप) यहां आप अर्द्ध रात्रि में आर्य समाज की स्थापना करते हुये गिरफ्तार कर लिये गये। पर काबुल के सीमा के बाहर लाकर छोड़ दिये गये। किन्तु आप दूसरी ओर से चले और नैसिरा, दरगई, मलाकन्द, स्वात होते बुनेर, (चिमाल के समीप) पहुंचे। यहाँ आप कई दिन तक रहे और टेम्प्रेन्स का कार्य करते रहे।

उसी अवसर पर मुसलमानों में यहाँ एक बड़ा दङ्गा हो गया। जिसमें ४० मुसलमान जान से मार डाले गये।

इस अवसर पर और आसाम काशमीर, आदि देशों की ओर चले गये। और वहां प्रचार करते रहे।

सन् १९२८ ई० में आप कलकत्ता होते हुए अंगोला मेल स्टीमर से रंगून को रवाना हुए।

रंगून में आपके पहले दिन के ही व्याख्यान में १४४ धारा लगा दी गई। परन्तु फिर भी वहां आप दो मास तक रहे। वहां से आप मांडला गये। मांडला में आपने स्त्रियों की आजादी देखी। वे सिगरेट इस क़दर पीती हैं कि उनके पास बैठना दुष्कर है। यहां पर आपने २५ व्याख्यान दिये। यहां एक डी० ए० वी० हाई स्कूल तथा एक कन्या पाठशाला है। जो भली भांति चल रही है।

वहां से आप मेमियो पहुंचे। इस स्थान की उपमा हिन्दुस्तान के नैनीताल पहाड़ से दी जा सकती है। यहां पर वर्मा का गवर्नर रहता है। यहां पर आपने ८ दिन तक व्याख्यान दिये। इसके बाद आप लासो चले गये। यह सान स्टेट के के नाम से प्रसिद्ध है। यह किसी समय चीन में था। परन्तु आज कल अंगरेजों के अधिकार में है।

लासो, नमटू, और मेमियो में आर्य-कन्या पाठशाला और डी० ए० वी० हाई स्कूल है।

लासो से आप लाप्लांग रवाना हुए। वहां जाने पर आपको ज्वर आया अतएव रंगून आर्यसमाज में आकर रहे। ज्वर के छोड़ देने के बाद आप मेल स्टीमर से कलकत्ता होते हुये इलाहाबाद आये।

पुस्तकें

आपने दस छोटे छोटे ट्रैक्ट लिखे हैं। जो निम्नलिखित हैं:—

१—गो, गोहार और शुद्धि २—वेश्या चरित्र दर्पण। ३—मादक वस्तु निषेध। ४—मद्यभंग निषेध। ५—टेम्प्रेंस संगीत। ६—स्वराज्य संगीत। ७—गोक्रन्दन। ८—स्नान चिकित्सा। ९—नवीन जागृति। १०—भारत की वर्णव्यवस्था और स्वराज्य। इन ट्रैक्टों की अच्छी बिक्री हुई। इससे आपने यथेष्ट धन प्राप्त किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त-प्रान्त को दान

इधर दैवोगत आपकी स्त्री का स्वर्गवास हो गया। अतएव आपने अपने परिश्रम से संग्रह किये धन को आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त को दान में दे दिया। वह इस शर्त पर कि मूल धन व्यय न किया जाय। उसकी आमदनी के दो तिहाई से उपयोगी पुस्तकें छापकर जन समाज में बांटी जावें और एक तिहाई मूल धन में सम्मिलित किया जाय।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन को दान

इस तरह आपने १०५) रुपया हिन्दी साहित्य सम्मेलन को भी दान में दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा की भांति इससे भी वही शर्त है। इस समय आपकी अवस्था ६६ वर्ष की है। वृद्ध होते हुये भी आप जन-समाज की सेवा में लगे रहते हैं। परम पिता परमात्मा से विनीत निवेदन है कि अभी आपको इस अवनीतल पर रक्खे ताकि आपसे आर्य्य संसार लाभ उठाता रहे।

सम्पूर्ण

समालोचना

(१) दुःखदायी दुर्व्यसन
(२) मौलवी साहब और जगतसिंह
(३) पादरी साहब से बचो

मूल लेखक पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०, गुजराती भाषान्तर कर्त्ता—श्री बल्लभदास रत्नसिंह मेहता प्रकाशक आर्य्य कुमार साहित्य प्रकाशन समिति आर्य्य-पुरा (करेली बाग) बड़ौदा।

आर्य्य कुमार साहित्य प्रकाशन समिति बड़ोदा की ओर महर्षि दयानन्द जागृति ग्रन्थमाला गुजराती भाषा में निकलती है। इस ग्रन्थमाला में बड़े सुन्दर ट्रैक्ट निकले हैं। यह तीनों ट्रैक्ट आर्य्य समाज चौक प्रयाग से प्रकाशित हुये थे। यह ट्रैक्ट इतने लोकोपयोगी सिद्ध हुये कि इनका अनुवाद उर्दू, मराठी, गुजराती, टामिल, बङ्गला आदि भाषाओं में हो चुका है। हम इसके गुजराती भाषान्तर कर्त्ता श्री बल्लभदास रत्नसिंह मेहता तथा आर्य्य कुमार साहित्य प्रकाशन समिति को बधाई देते हैं और हमें आशा है कि इसी प्रकार का साहित्य गुजराती भाषा में और लिखा जायगा।

बाल्य सुधार—लेखिका श्रीमती कृष्ण देवी जी श्रीवास्तव, अत्रिसूया प्रयाग। पृष्ठ संख्या ६६। मूल्य ।)। लेखिका से प्राप्त।

यह सुन्दर पुस्तक बालकों के लिये लिखी गई। वार्त्तालाप के रूप में ज्ञान की बातें लिखी हैं आशा है कि इससे बालकों को लाभ होगा।

शुभ-संग्रह—संग्रहकर्त्ता श्री जय-नारायण जी, प्रकाशक श्री दालूराम जी शर्म्मा कोषाध्यक्ष-वैदिक पाठशाला, ५ ग्वालो लेन, कलकत्ता। मूल्य =)

इस पुस्तक में भिन्न भिन्न विद्वानों के सुन्दर लेखों का बड़ा सुन्दर संग्रह है। लेख के बड़े ही सुन्दर है।

महाकवि "शंकर" जी

[श्री विश्वप्रकाश जी बी० ए०, एल०-एल० बी०]

विगत २१ अगस्त को एक महान् आर्य्य कवि पृथ्वीतल पर से उठ गया। आर्य्य कवियों में सर्वश्रेष्ठ शंकर इस नश्वर शरीर को छोड़ कर चला गया। कोयल अपना घर छोड़कर चल देती है, पर उसके मधुर गान का आभास रह जाता है। रह रह कर हृदय में कोयल के मीठे तराने उठ बैठते हैं। "शङ्कर" चला गया, उसको हम न पा सकेंगे, पर क्या उसके मधुर गीत उसके साथ गये। नहीं, नहीं वह अब भी हमारी जिह्वा पर हैं।

प्यारे शङ्कर! तुझमें बड़ा आकर्षण था, यदि आकर्षण न होता तो भला हम तेरे वियोग में दुखित क्यों होते। संसार से न जाने कितने चले गये, न जाने कितनी मृतशय्या के सिरहाने हम बैठते हैं, रोगी के शरीर से श्वास निकला नहीं, हम मोह छोड़ देते हैं। पर तेरी मृतशय्या ऐसी नहीं जो भुलाई जा सके।

"शङ्कर स्वामी से मिला,
बिछुड़ा शङ्करदास।"

शङ्कर तो स्वामी से जाकर मिल गया। संसार के बन्धन से छूट गया पर शङ्कर के दास जो हमारे समान हैं वे बिछुड़ ही गये।

"शङ्कर" कवि स्वयं ही लिख गये हैं और ऐसे अनुपम छन्दों में, तो हम ही क्या करें।

घर में रहा न रहने वाला।
खोल गया सब द्वार किसी में लगा न फांटक ताला।
हाय निशङ्क अदृष्ट वली ने घेर घसीट निकाला॥
घर में रहा न रहने वाला।
जाने किस पुर की बाखर में, अब की बार बिठाला।
हा? प्रासादिक परिवर्तन का, अटका कष्ट कसाला॥
घर में रहा न रहने वाला।
ढंग बिगाड़ दिया मन्दिर का, अङ्ग भङ्ग कर डाला।
श्रीहत हुआ अमङ्गल छाया, कहीं न ओज उजाला।
घर में रहा न रहने वाला।
शंकर ऐसे पर-बन्धन से, पड़े न पल को पाला।
आग लगे इस बन्दी-गृह में, मिले महा-सुख-शाला॥
घर में रहा न रहने वाला।

इस बन्दी-घर में आग लग गई है, जलकर भस्म हो गया।

शरीर का हम अभिमान ही किस बूते पर करें?

'देखी खर की दुर्दशा, उपजा उत्तम ज्ञान।
शंकर ने देहादि का, दूर किया अभिमान।'

शङ्कर ने खर की दुर्दशा जो देखी तो सारा मोह छोड़ दिया है। तो भाई हम क्या करें?

एक तोता पिंजड़े में बन्द मिला कवि की आत्मा में भावों की अवली लग गई। बोल उठे।

"लाद पराये धर्म का, संकट भार अतोल
तोता पिंजड़े में पड़ा, बोल मनुज के बोल।"

और

"तोते तू तेरे करतब ने
इस बन्धन में डाला है रे।......
पंजे नहीं छुड़ा सकते हैं,
क्या ये पंख उड़ा सकते हैं।
चोंच न काटेगी पिंजड़े को,
शङ्कर ही रखवाला है रे?"

शङ्कर कोई साधारण कवि न थे। उनकी कविता जन समुदाय को उठाने वाली थी उनकी एक एक कविता में अनमोल रत्न भरे हैं।

अविद्यानन्द के व्याख्यान को पढ़िये कितना रोचक व्याख्यान है।

महीनों पड़े देव सोते रहें।
महीदेव डूबे डुबोते रहें॥
मरी चेतना—हीन गंगा बही।
न पूरी कला तीरथों में रही॥
कमाऊ जड़ों की न पूजा टली।
न विज्ञान फूला न विद्या फली॥
निकम्मे सुरों की न सेवा करो।
चढ़े भूतनी भूतड़ों से डरो॥
मसानी मियाँ को मना लीजिये।
जखैया रखैया बना लीजिये॥
करेंगे बली निर्बलों को भली।
न विज्ञान फूला न विद्या फली।
कभी गाय बूढ़ी नहीं पालना।
किसी मिश्र को दान दे डालना॥
बड़ाई मिलेगी बड़ी आप को।
इसी भांति काटा करो पाप को॥
कहो गोलोक की जान ली।
न विज्ञान फूला न विद्या फली॥
महा-तंत्र के मंत्र देते रहो।
खरी दक्षिणा दान लेते रहो॥
लगातार चेले बढ़ाते रहो।
नई चेलियों को पढ़ाते रहो॥
रहे श्याम के साथ श्यामा लली।
न विज्ञान फूला न विद्या फली॥
अमीरो धुआँ धार छोड़ा करो।
पड़े खाट के बान तोड़ा करो।
मजेदार मूछें मरोड़ा करो।
निठल्ले रहो काम थोड़ा करो॥
चबाते रहो पान दोरे डली।
न विज्ञान फूला न विद्या फली॥
रुई, नाज देशी दिया कीजिये।
बिदेशी खिलौने लिया कीजिये॥

हवेली घरों को सजाया करो ।
पड़े मस्त बाजे बजाया करो ॥
चढ़ें मोटरों पै मझोली न ली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥
खरी खाँड़ देशी न लाया करो ।
बुरी बीट चीनी गलाया करो ॥
लुके लाट, शीरा मिलाते रहो ।
दुरंगी मिठाई खिलाते रहो ॥
कहो ? नाक यों धर्म की काट ली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥
बहू बेटियों को पढ़ाना नहीं ।
घरेलू घटी को बढ़ाना नहीं ॥
पढ़ी नारि नैया डुबो जायगी ।
किसी मित्र की मैम होजायगी ॥
बनेगी नहीं हंसनी कागली ।
न विज्ञान फूला न विद्या फली ॥

ब्रह्मचर्य का महत्व कवि नें कितने मनोहर शब्दों में किया है ।

चूका कहीं न, हाथ गले, काटता रहा ।
पैना कुठार, रक्त बसा, चाटता रहा ॥
भागे भगोड़, भीरु भिड़ा, धीर न कोई ।
मारे महीप, वृन्द बचा, वीर न कोई ॥
सुप्रसिद्ध राम,-जामदग्न्य, का कुदान है ।
महिमा-अखण्ड, ब्रह्मचर्य, की महान है ॥
सुग्रीव का सुमित्र बड़े, काम का रहा ।
प्यारा अनन्य,-भक्त सदा, राम का रहा ॥
लङ्का जलाय, काल खलों, को सुझा दिया ।
मारे प्रचण्ड, दुष्ट दिया, भी बुझा दिया ॥
हनुमान बली, वीर-वरों, में प्रधान है ।
महिमा-अखण्ड, ब्रह्मचर्य, की महान है ॥
संसार सार, हीन सड़ा, सा उड़ा दिया ।
अल्पज्ञ जीव, मन्द दशा, से छुड़ा दिया ॥
अद्वैत एक, ब्रह्म सबों, को बता दिया ।
कैवल्य-रूप, सिद्धि-सुधा, का पता दिया ॥
भ्रम-भेद भरा, शङ्करेश, का न ज्ञान है ।
महिमा-अखण्ड, ब्रह्मचर्य, की महान है ॥
विज्ञान-पाठ, वेद पढ़ों, को पढ़ा गया ।
विद्या-विलास, विज्ञ वरों, का बढ़ा गया ॥
सारे असार, पन्थ मतों, को हिला गया ।
आनन्द-सुधा, सार दया, का पिला गया ॥
अब कौन दया, नन्द यती, के समान है ।
महिमा-अखण्ड ब्रह्मचर्य, की महान है ॥

जितने अध्यङ्क निकले उन सबमें कविवर की उत्कृष्ट कविता निकला करती थीं ।

कविवर के विद्वान् पुत्र श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्म्मा भी एक बड़े कवि हैं । आप बड़ी विद्वत्ता से आर्य्यमित्र का संपादन कर रहे हैं । इससे बढ़ कर कवि की संसार को और क्या भेंट हो सकती है ?

हम शङ्कर परिवार के साथ अपनी सम्वेदना प्रकट करते हैं और प्रार्थी हैं कि यह महाकवि चिरानन्द को प्राप्त हो ।

——:०:——

शंका-समाधान

[प्रेषक—रविवर्मा भ[illegible]र, उज्जैन]

शङ्का

"(प्रश्न) तो क्या ज्योतिःशास्त्र झूठा है ?

(उत्तर) नहीं, जो उसमें अङ्क, बीज रेखा-गणित विद्या है वह सब सच्ची और जो फल की लीला है वह सब झूठी है।"

म० प्र० पृ० १७

यहाँ स्वामी जी फलित ज्योतिष को झूठ बतलाते हैं परन्तु इसके विरुद्ध सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में आप लिखते हैं "एकादशी व त्रयोदशी को छोड़ बाक़ी दस रात्रियों में गर्भाधान करना उत्तम है।" यहां पर एकादशी व त्रयोदशी को छोड़के गर्भाधान करने की आज्ञा देना फलित ज्योतिष के अनुसार है। अतएव स्वामी जी का लेख परस्पर विरुद्ध ठहरता है। कृपया इसकी संगति लगावें।

समाधान

यह फलित ज्योतिष नहीं किन्तु शुद्ध गणित ज्योतिष है। इसमें फलित की गंध तक नहीं। जिस प्रकार भिन्न २ तिथियों में चन्द्रमा का प्रभाव समुद्र की लहरों पर भिन्न २ होता है जिससे ज्वार भाटा होते हैं इसी प्रकार भिन्न तिथियों में चन्द्रमा का प्रभाव स्त्रियों के मन और शरीर पर भी होता है। इसी शारीरिक प्रभाव के हिसाब से यह तिथियां निश्चित की गई हैं। शायद लोग फलित और गणित का भेद करने में भूल कर जाते हैं। ज्वार भाटे फलित ज्योतिष का भाग नहीं हैं। वे चन्द्रमा की स्तुति, या दान आदि के द्वारा घटाये बढ़ाये नहीं जा सकते। वे तो भौतिक घटनायें हैं। यदि मैं कहूं कि ज्येष्ठ का सूर्य्य मुझे सताता है तो मेरा यह कथन फलित ज्योतिष से सम्बन्ध नहीं रखता किन्तु गणित से। यदि मैं सूर्य्य की प्रार्थना करने लगूं या उसके उपलक्ष में ज्योतिषियों को दान देकर कुछ अनुष्ठान कराऊं जैसा कि फलित ज्योतिष वाले कराया करते हैं तो उससे ज्येष्ठ का सूर्य्य मुझे सताना कम न करेगा। यदि सूर्य्य ज्येष्ठ में सताता है तो इसलिये नहीं कि वह क्रुद्ध है। और अगहन में अपने ताप को मन्द कर देता है। वह इसलिये नहीं कि प्रसन्न है। यह तो सभी के साथ ऐसा ही करता है।

विशेष तिथियाँ जो वर्जित हैं वे सभी स्त्री पुरुषों के लिये न कि विशेष नक्षत्र या विशेष राशियों में उत्प[illegible]ों के लिये। इसी से सिद्ध होता है कि यह फलित ज्योतिष अथवा नक्षत्रों की तुष्टि से सम्बन्ध नहीं रखता यदि फलित ज्योतिष से अभिप्राय होता तो कहते कि जिसके अमुक ग्रह हों उसके लिये अमुक तिथियां वर्जित हैं और अन्य के लिये अमुक फलित ज्योतिष में तो नक्षत्रों के शान्त करने तथा विशेष दशाओं में विशेष अनुष्ठान करके नियत मार्ग का उल्लङ्घन करने का भी विधान है। परन्तु यहाँ यह भी नहीं।

शङ्का

"अंगरेज' वन, अन्त्यजादि से भी खाने पीने का भेद नहीं रक्खा है इन्होंने यही समझा होगा कि खान पान और जाति भेद तोड़ने से हम और हमारा देश सुधर जायगा परन्तु ऐसी बातों से सुधार कहां उल्टा बिगाड़ होता है।"

बड़े आश्चर्य की बात है कि स्वामी जी जिन बातों में बिगाड़ मानते हैं आर्य समाजी लोग उन्हीं बातों में "सुधार" मानते हैं। अब आप ही बतलावें कि स्वामी जी गलती पर हैं या आजकल के आर्य समाजी ?

समाधान

स्वामी जी प्रत्येक दशा में सब के साथ खान पान करने के पक्ष में नहीं और यही मत बहुत से आर्य सामाजिकों का भी है। मतों में कुछ भेद देश काल के परिवर्त्तन से हो सकता है परन्तु यह प्रश्न स्थायी सिद्धान्तों का नहीं है। स्वामी जी ने उन लोगों का खण्डन किया है जो खान-पान को सुधार का विशेष अङ्ग समझते हैं। क्या जहां खान-पान की कोई रोक टोक नहीं वहां सुधार की आवश्यकता नहीं है ?
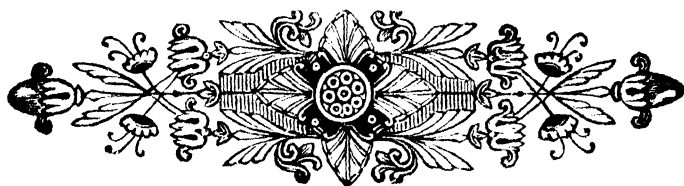
२५—जल से सने पवित्रों से प्रोक्षणियों को पवित्र करने का तात्पर्य्य यह है कि जलों में घी को रखता है। और जल में घी हितकर हो जाता है। क्योंकि यह जब बरसता है तो औषधियाँ उत्पन्न होती हैं? औषधियों को खाकर और जलों को पीकर उसका रस बनता है। इस (यजमान का) रस उत्पन्न करने के लिये ही (ऐसा किया जाता है)।

२६—अथाज्यमवेक्षते। तद्धैके यजमानमवख्यापयन्ति तदु होवाच याज्ञवल्क्यः कथं नु न स्वयमध्वर्यवो भवन्ति कथꣳ स्वयं नान्वाहुर्यत्र भूयस्य—इवाशिषः क्रियन्ते कथं न्वेषामत्रैव श्रद्धा भवतीति यां वै कां च यज्ञऽऋत्विजआशिषमाशासते यजमानस्यैव सा तस्मादध्वर्युरेवावेक्षेत।

२६—अब वह घी को देखता है। कुछ लोग यजमान को दिखलाते हैं। परन्तु याज्ञवल्क्य का इस विषय में यह कहना है। यजमान स्वयं ही अध्वर्यु क्यों नहीं हो जाते? वह स्वयं ही क्यों नहीं जपते जब अधिक आशीर्वाद दिये जाते हैं। उन लोगों की इस पर कैसे श्रद्धा होगी? जो आशीर्वाद ऋत्विज लोग देते हैं वह सब यजमान के लिये ही होते हैं। इसलिये अध्वर्यु ही देखे।

२७—सोऽवेक्षते। सत्यं वै चक्षुः सत्यꣳ हि वै चक्षुस्तस्माद्यदिदानीं द्वौविवदमानावेयाताऽमहमदर्शमहमश्रौषमिति य एव ब्रूयादहमदर्शमिति तस्माऽएव श्रद्दध्याम तत्सत्येनैवैतत्समर्द्धयति।

२७—वह इसको देखता है...आँख ही सत्य है। आँख ही सत्य है। इस समय यदि यहाँ दो पुरुष आवें। एक कहे, 'मैंने देखा है", दूसरा कहे, "मैंने सुना है", तो उसी का विश्वास करेंगे जो कहता है "मैंने देखा है", न कि दूसरे का। इस प्रकार करने से वह घी को सत्य के द्वारा बढ़ाता है।

२८—सोऽवेक्षते। तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसीति स एष सत्य एव मन्त्रस्तेजो ह्येतच्छुक्रꣳ ह्येतदमृतꣳ ह्येतत्तत्सत्येनैवैतत्समर्द्धयति।

२८—वह यह मंत्रांश पढ़कर देखता है:—

तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि।

(यजु० १।३१)

"तू तेज है, शुक्र है, अमृत है।"

यह मंत्र ठीक ही है, क्योंकि घी तेज है, शुक्र है और अमृत है। इस प्रकार वह इसको इस मंत्र द्वारा बढ़ाता है।

———

(२)

यज्ञ सम्बन्धी सारांश

१—स्रुकों को माँज कर गरम करना।

२—यजमान की स्त्री की कमर में कपड़े के ऊपर मौञ्जीबन्धन करना।

३—पत्नी घी की ओर देखे। फिर घी को वेदि में लाकर रखना।

४—प्रोक्षणी में पड़े हुये पवित्रों से घी शुद्ध करना।

५—शुद्ध घी को यजमान देखे।

(३)

उपदेश तथा भाषा सम्बन्धी टिप्पणियां

१—जघनार्धो वाऽएष यज्ञस्य यत् पत्नी। (१।३।१।१२)

पत्नी यज्ञ का पिछला भाग है।

२—ओषधयो वै वासो (१।३।१।१४) कपड़ा ओषध का प्रतिनिधि है (कपास से बनता है)।

३—इयं वै पृथिव्यदितिः सेयं देवानां पत्नी (१।३।१।१७)

यह पृथ्वी ही अदिति है। यह देवों की पत्नी (रक्षिका) है।

४—सत्यं वै चक्षुः (१।३।१।२७) आँख से देखा हुआ ही सत्य है। (सुना हुआ नहीं)।